इरेडा
IREDA

# अक्षय क्रांति

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड

**Indian Renewable Energy Development Agency Ltd.**

(भारत सरकार का प्रतिष्ठान/ (A Govt. of India Enterprise)

इरेडा
IREDA

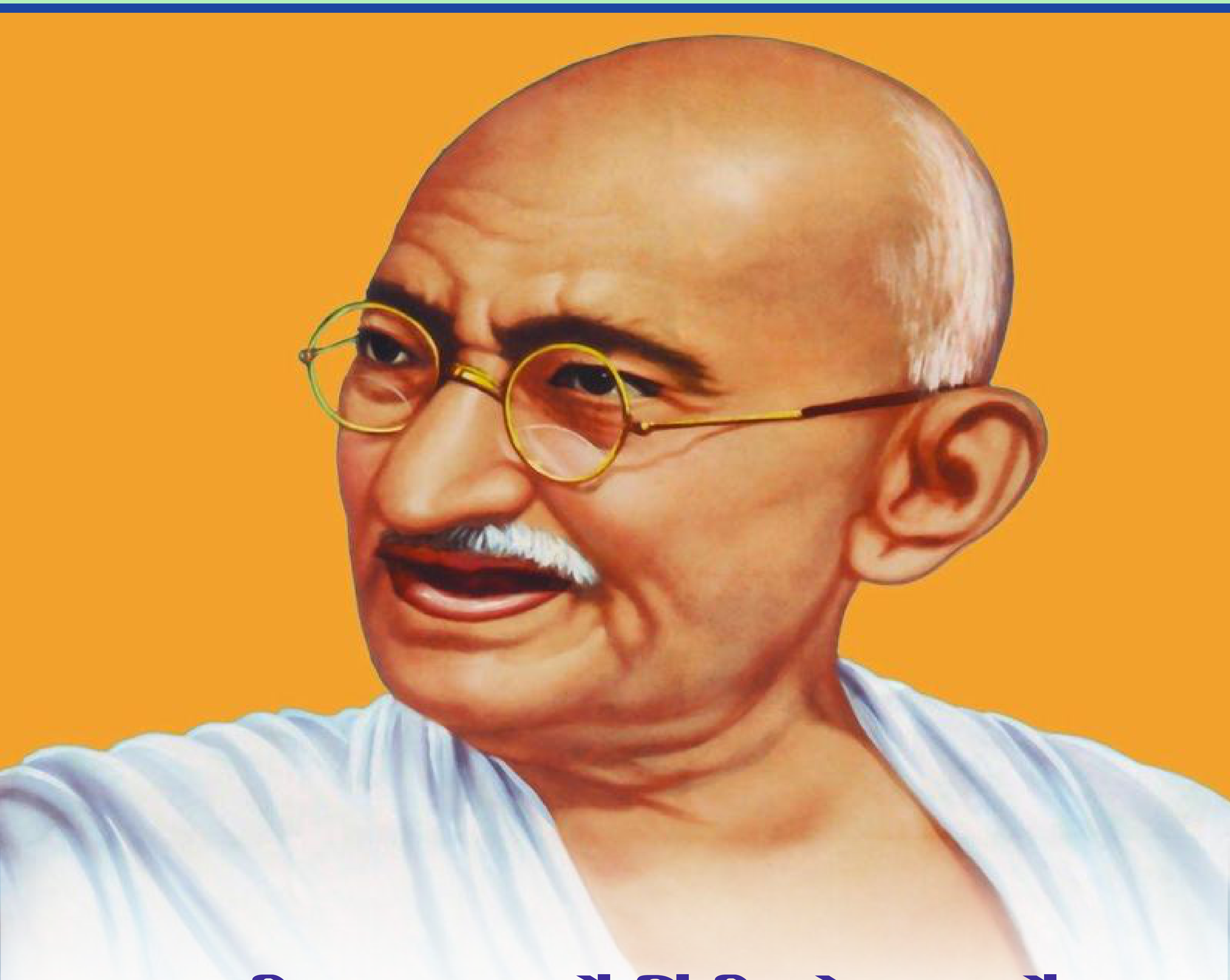

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की एकता और उन्नति के लिए आवश्यक है।

महात्मा गांधी

# हिंदी दिवस
# 14 सितम्बर

# अक्षय क्रांति

## संरक्षक

श्री प्रदीप कुमार दास
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

## परामर्शदाता

डॉ. पी. श्रीनिवासन
महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं सीएसआर)

## संपादक

श्री नरेश वर्मा
उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

## सहसंपादक

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव
मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)

## विशेष सहयोग

श्री आलर कुल्लू, हिंदी अधिकारी
श्रीमती शशि बाला पपनैं, अधिकारी (जनरल)
सुश्री तुलसी, वरि. कार्यालय सचिव

इरेडा
IREDA

नरेन्द्र मोदी (प्रधान मंत्री)

**भाषा की सरलता, सहजता और शालीनता**
**अभिव्यक्ति को सार्थकता प्रदान करती है।**
**हिंदी ने इन पहलुओं को खूबसूरती से समाहित किया है।**

# हिंदी दिवस
# 14 सितम्बर

# अनुक्रमाणिका


| क्र.सं. | विषय | रचना वर्ग | लेख/रचिता | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| 1. | हिंदी भाषा के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी | -- | नरेश वर्मा | 01 |
| 2. | | | | |
| 3. | | | | |
| 4. | नारी शक्ति का सम्मान -महिला दिवस | कविता | जितेन्द्र मिश्रा | 04 |
| 5. | हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है | लेख | नरेश वमा | 5-6 |
| 6. | कुछ पक्तियां दिल को छू लेने वाली | कविता | उन्नति वर्मा | 07 |
| 7. | वो आई थी क्या | कविता | विवेक द्विवेदी | 08 |
| 8. | मुन्सी प्रेमचंद जी की एक सुंदर कविता | कविता | योगेश हंस शर्मा | 9-10 |
| 9. | रामायण कथा का एक अंश | लेख | नरेश वर्मा | 11-12 |
| | जिससे हमे सीख मिलती है ...की ''एहसास' | | | |
| 10. | आशा के बीजो की खेती | कविता | गौतम कुमार मीणा | 13 |
| 11. | ईमानदारी का जीवन | लेख | सरबजीत कौर | 14-15 |
| 12. | ''असली आजादी - भ्रष्टाचार से आजादी '' | कविता | पीयुष अग्रवाल | 16-18 |
| 13. | जलवायु परिवर्तन की ओर हमारी दिल्ली | लेख | रिज़वान अथर | 19-20 |
| 14. | माँ | कविता | ऋषभ मंगल | 21 |
| 15. | हे कोरोना | कविता | रोमेश कुमार गुप्ता | 22 |
| 16. | ऐ स्त्री -तेरी कहानी | कविता | कनिका शर्मा | 23-24 |
| 17. | कोरोना | कविता | हर्षवर्धन आर्य | 25-26 |
| 18. | समय चला, पर कैसे चला, पता ही नही चला, | कविता | अशोक भीलवारिया | 27-28 |
| 19. | बिच्छू घास (Nettle) | लेख | परवेश शर्मा | 29-31 |
| 20. | ठहराव | कविता | राजीव त्यागी | 32 |
| 21. | माँ और बेटी | कविता | गोकुलनन्दा बेहेरा | 33 |
| 22. | भारत माता के लाल की जमी का यादगार सफर | लेख | रोहित गुप्ता | 34-35 |
| 23. | आत्मचिंतन | लेख | -- | 36 |
| 24. | | | | |
| 25. | शाकाहारी बनो | कविता | -- | 38-39 |
| 26. | तुलसी कौन थी ? | लेख | -- | 40 |
| 27. | | | | |
| 28. | | | | |
| 29. | पिता कन्यादान नही करूंगा जाओ : | कविता | -- | 44 |

श्री आर० के० सिंह
मंत्री (एन०आर०ई)

विद्युत एवं नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
भारत सरकार

## संदेश

हिन्दी दिवस के अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाए ।

संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को भारत संघ की राजभाषा के रूप में हिन्दी को अपनाया था । उसी समय से हर वर्ष 14 सितम्बर हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिन्दी दिवस हमारे लिए यह चिंतन करने का अवसर है कि हमने अपनी राजभाषा को कितना प्रोत्साहन दिया है और संविधान निर्माताओं के सुंदर स्वप्न को किस हद तक साकार किया है ।

हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो विभिन्न सांस्कृतिक विविधताओं के होते हुए भी पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में जोडकर रख सकती है। आज हिन्दी का महत्व राजभाषा, संपर्क भाषा और विश्व भाषा के रूप में बढ़ राह है। केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में भी हिन्दी का प्रयोग पहले की तुलना में अब कई गुना बढ़ गया है। तहां तक सरकारी कामकाज में हिन्दी प्रयोग का संबंध है, हमें मन से यह दृढ़ निश्चय करना होगा कि हम इस दिशा में और अधिक प्रयास करेंगे ।

हिन्दी दिवस के इस पावन अवसर पर मैं नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय और इसके अंतर्गत आने वाले सभी कार्यालयों में कार्यरत सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अपील करता हूँ कि हम सब गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा सरकारी कार्यालयों के लिए निर्धारित किए गए लक्ष्यों की शत-प्रतिशत प्राप्ति करते हुए अपना पूरा सरकारी काम सरल हिन्दी में करेंगे और भारत के संविधान में राजभाषा हिन्दी को प्राप्त सम्मान को बनाए रखेंगे ।

जय हिन्द, जय भारत ।

(आर. के. सिंह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2020

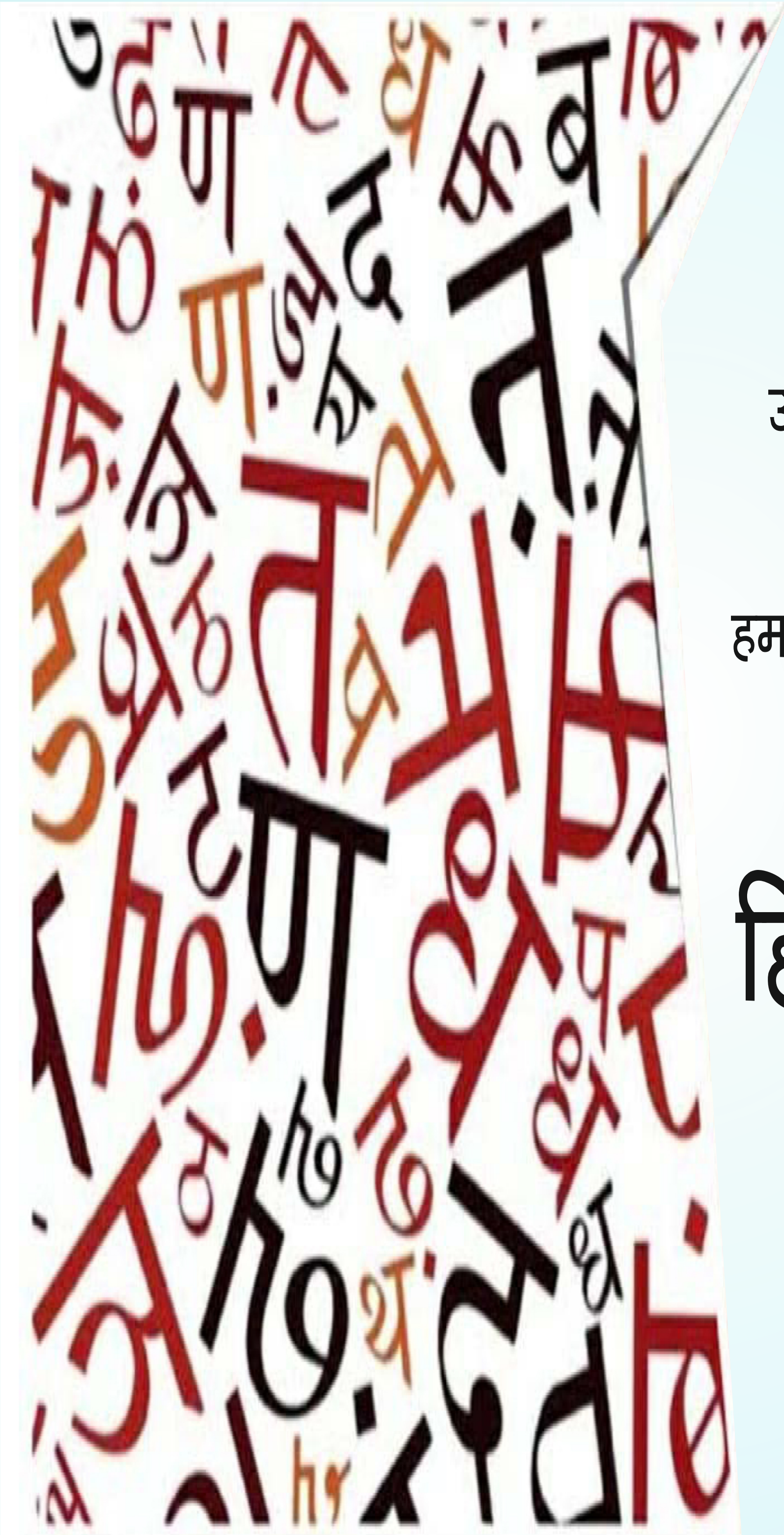

हिंदी को आगे बढ़ाना है,

उन्नति का राह ले जाना है।

केवल एक दिन ही नहीं,

हमने नित हिंदी दिवस मनाना है।

# हिंदी दिवस की शुभकामनाएं

## *हिंदी दिवस*
***के अवसर पर आप सभी को***
## *हार्दिक शुभकामनाएं।*

***प्रदीप कुमार दास***
***अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा***

# संदेश

प्रिय साथियों,

आज 14 सितम्बर, 2020 हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

जैसा कि आप सभी इरेडा कर्मियों को यह ज्ञात है कि भारत के संविधान में 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। अतः प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर के दिन हिंदी को सम्मान देते हुए हिंदी दिवस मनाया जाता है।

हिंदी राजभाषा है, अर्थात राज–काज/सरकारी कामकाज की भाषा है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक वर्ष वार्षिक कार्यक्रम जारी किया जाता है जिस पर आधारित जांच बिंदु 2020 इरेडा में जारी किये गए हैं। इन लक्ष्यों को प्राप्त करना प्रत्येक इरेडा कर्मी का कर्तव्य है, अतः इरेडा में काम–काज में हिंदी के प्रयोग को हमें और अधिक बढ़ाना है।

इरेडा में समय–समय पर राजभाषा विभाग के माध्यम से कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य करने एवं हिंदी अनुवाद संबंधी प्रशिक्षण भी कराए गए हैं। कार्यशालाओं के माध्यम से राजभाषा नियमों की जानकारी भी निरंतर उपलब्ध कराई गयी है और भविष्य में भी कराई जाती रहेगी।

मैं आशा करता हूँ कि आप सभी अधिक से अधिक एवं सरल भाषा का प्रयोग करते हुए सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में ही करें। इस दिशा में आपकी सहायता के लिए हिंदी अनुभाग में कार्यरत सभी कार्मिक तत्परता से सहयोग करेंगे।

अतः आज हिंदी दिवस में आप सभी अपने आप से यह संकल्प करें कि आप सभी अपना कार्यालयी कार्य पूरे उत्साह, लगन एवं निष्ठा से हिंदी में मूल रूप से करेंगे और इरेडा को अन्य क्षेत्रों के साथ–साथ राजभाषा के प्रगामी प्रयोग के क्षेत्र में भी सर्वोत्कृष्ट उपक्रम के रूप में प्रतिष्ठित करेंगे।

प्रदीप

प्रदीप कुमार दास
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

नई दिल्ली
14 सितम्बर, 2020

# इरेडा मिशन

''स्थायी विकास के लिए अक्षय स्रोतों द्वारा ऊर्जा उत्पादन, ऊर्जा दक्षता और पर्यावरण प्रौद्योगिकियों के क्षेत्रों में आत्म निर्भर निवेश को प्रोत्साहित व वित्तापोषित करने वाली एक अग्रणी, प्रतिभागियों की हितैषी एवं प्रतियोगी संस्था के रूप में बने रहना।''

# इरेडा के मुख्य उद्देश्य

क. नए एवं अक्षय स्रोतों के जरिए विद्युत और / या ऊर्जा का उत्पादन करने और ऊर्जा दक्षता के माध्यम से ऊर्जा का संरक्षण करने के लिए विशिष्ट परियोजना एवं योजना को वित्तीय सहायता प्रदान करना।

ख. अक्षय ऊर्जा एवं ऊर्जा दक्षता/संरक्षण परियोजनाओं में दक्ष एवं प्रभावी वित्तपोषण प्रदान करने के लिए अग्रणी संगठन के रूप में अपनी स्थिति को बनाए रखना।

ग. अभिनव वित्तसपोषण द्वारा अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में इरेडा की हिस्सेदारी बढ़ाना।

घ. प्रणालियों, प्रक्रियाओं एवं संस्थानों में निरंतर सुधार के जरिए ग्राहकों को प्रदान की गई सेवाओं की दक्षता में सुधार करना।

ङ. ग्राहक संतुष्टि के माध्यम से प्रतियोगी संस्थान बनने का प्रयास करना।

# गुणवत्ता नीति

इरेडा अपने उपभोक्ताओं को पूर्ण संतुष्टि एवं पारदर्शिता प्रदान करने के लिए दक्ष प्रणाली एवं प्रक्रियाओं के जरिए अक्षय ऊर्जा एवं ऊर्जा दक्षता/संरक्षण में अभिनव वित्त पोषण प्रदान करने के लिए एक अग्रणी संगठन के रूप में अपनी स्थिति कायम रखने के लिए प्रतिबद्ध है।

इरेडा गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली के जरिए अपने उपभोक्ताओं को दी जाने वाली सेवाओं के गुणवत्ता में लगातार सुधार के लिए प्रयास करेगी।

# गुणवत्ता उद्देश्य

क. – उपभोगता की पूर्ण संतुष्टि के लिए प्रयास करना।

ख. – क्षमता में निरंतर उन्नयन और कर्मचारियों के पेशेवर कौशलों में सुधार।

ग. – उपभोक्ताओं को प्रदान की जाने वाली सेवाओं की दक्षता में सुधार।

घ. – प्रणालियों, प्रक्रियाओं एवं सेवाओं में निरंतर सुधार।

डॉ. पी. श्री निवासन

**महाप्रबंधक**

(मानव संसाधन और सीएसआर),

इरेडा


# खुद को जानें

गुह्यं ब्रह्मा तदिदं स्वर ब्रवीमि
न मनसुते सृष्टामरहि किंचित

महा भारत के श्लोक में वर्णित है कि धरती पर मनुष्य से बढ़कर कुछ भी नहीं है। जीवन में उन्नति के साथ, मानवता, भाईचारा और शांति एक आदमी के लिए भूले हुए पृष्ठ की तरह  हैं। हर एक अपने कर्तव्यों को भूलकर, अपने अधिकारों के बारे में बात कर रहा है ।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, लेकिन अंतर यह है कि जानवर संतुष्ट हो जाता है उसकी जरूरतें पूरी होने पर। अक्सर मानव अपने स्वयं के दृष्टिकोण से सब कुछ देखना चाहता है। समाधान के लिए सकारात्मक मूल्य पर पहुंचने के लिए तार्किक रूप से हर काम को कम किया जा रहा है। हर एक में एक ही आकांक्षा, वृत्ति और आग्रह है, फिर आम संप्रदाय के लिए कोई समझौता क्यों नहीं किया जाता है। कोई भी पूरी तस्वीर देखने के लिए तैयार नहीं है। हर कोई एक दूसरे को देख रहा है। कोई भी अपने आपको नहीं देख रहा है। अपने उपनिषदों द्वारा अपने आपको जानने (आत्मन विद्धि) की परिकल्पना की गई है।

कश्चिद्विद्वानपहतपाप्माऽक्षाध्यक्षोऽवदातमनास्तन्निष्ठ आवृत्तचक्षुः सो अन्तरात्म

मैत्री उपनिषद कहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति जो जानता है, बुराई से मुक्त, अपनी इंद्रियों का स्वामी, मन में पवित्र, अपने आत्म में, आत्म निरीक्षण करने वाला, वह (आत्मा, आत्मान) है।

मनुष्य को यह एहसास होना चाहिए कि जब प्रतिकूलता उसके दरवाजे को खटखटाती है, तो उसे कैसे जवाब देना है ? जीवन सब रुझान के बारे में, उसे अपनाने और उन सभी संघर्षों को परिवर्तित करने का है, जो हम कुछ सकारात्मक अनुभव करते हैं । हर कोई सोचता है कि केवल वे दुखी हैं । जीवन में, हमारे आसपास और हमारे साथ बहुत कुछ घटित होता हैं, लेकिन केवल एक चीज जो वास्तव में मायने रखती है वह यह है कि आप इस पर प्रतिक्रिया कैसे करते हैं और आप इस से क्या सबक लेते हैं।

एक बार जब विजय सतगुरु के पास गया और उसने कहा कि उसका मानना है कि केवल दुनिया में वे ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति हैं, जिसने अपने जीवन में सभी दुखों को झेला है और निवेदन किया कि वह कैसे अपने कष्टों से बाहर आ सकता हैं ।

सतगुरु ने उसे आलू, अंडा और हल्दी दी, और उसे अपने सामने तीन उबलते बर्तन में रखने को कहा। कुछ समय बाद, उन्होंने विजय को उबलते हुए बर्तन से उन वस्तुओं को बाहर निकालने के लिए कहा । विजय ने नरम आलू निकाला, कठोर अंडे को पाने के लिए खोल को तोड़ दिया और उसने कहा कि हल्दी पूरी तरह से पानी में मिल गयी है ।

सतगुरु ने तब विजय को समझाया, कि तीन वस्तुओं ने एक ही स्थिति में अलग-अलग तरह से प्रतिक्रिया व्यक्त की है, और कैसे यह हमें एक ही स्थिति पर प्रतिक्रिया देना सिखा रही है। अतः इससे सबक मिलता कोई एक हल्दी कि तरह 'विशेष' भी हो सकता है ।

इरेडा
IREDA

अमित शाह
(गृह मंत्री)

# भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

## हिंदी दिवस
## 14 सितम्बर

नरेश वर्मा

उप महाप्रबंधक (एचआर), इरेडा


# हिंदी भाषा के बारे में कुछ महत्वपूर्ण जानकारी

- "ग्रामर ऑफ हिन्दुस्तानी लेंग्वेज" जॉन गिलक्रिस्ट द्वारा पहली देव नागरी आधारित टाईप पहली किताब थी जो सन् 1796 में कोलकाता से प्रकाशित हुई थी।
- हिंदी का पहला अखबार "उदन्त मार्त्तण्ड", (अर्थ उगता हुआ सूरज) पंडित जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में 30 मई 1826 को प्रकाशित हुआ था।
- पहला हिंदी आंदोलन सन् 1835 में 'बिहार' राज्य में हुआ था।
- स्वर्गीय श्री लाला श्रीनिवास दास जी ने पहला हिंदी का उपन्यास सन् 1886 में लिखा था जिसका नाम "परीक्षागुरू" है।
- "भाग्यवती" पहला प्रकाशित हिन्दी उपन्यास सन् 1877 में आया जिससे स्वर्गीय बीशारदा राम फिल्लौरी ने लिखा
- गोपाल चन्द्र का 'नहुष' पहला हिंदी मौलिक नाटक माना जाता है।
- सन् 1930 में पहला हिंदी टाइप राइटर अस्तित्व में आया।
- पहली बोलती हिंदी फिल्म 'आलम-आरा' निर्देशक अर्देशिर ईरानी द्वारा सन् 1931 में बनाई गई थी।
- लोक सभा में 15 मई, 1952 को पहली बार हिंदी में संबोधनसी करके तत्कालीन सांसद श्री एन. एल शर्मा ने किया।
- पहली हिन्दी व्याकरण किताब, "हिन्दी वर्तनी का मानकीकरण" सन! 1967 में प्रकाशित हुई
- हिंदी भाषा की रचना के लिए पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार श्री सुमित्रानंदन पंत जी को दिया गया।
- पहला विश्व हिंदी सम्मेलन जनवरी, 1975 में भारत में हुआ जिसमें लगभग 30 देशों ने भाग लिया।
- संयुक्त राष्ट्र संघ मे पहली बार हिंदी में भाषण 1977 में तत्कालीन विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने दिया।

(संकलन)

संगीता श्रीवास्तव
प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा)

# “तितली”

तुम्हारे पंखों के इन रंगों में,
कि तुम अद्‌भुत दुनिया से आई हो,
एक इशारा है।
क्योंकि इन रंगों के मेल का कोई भी रंग,
इस दुनिया का तो नहीं ।।
इतनी चमक,
इतनी मोहब्बत और निराला पन और
इतनी विविधता,
क्या कहती है तुम्हारी उड़ान ?
क्यों तुम्हें देखते ही मिट जाती है?
सिकुड़ती, भटकती इस दुनिया की थकान ।।
बेबाक ,पवित्र, उड़ान कहती है।
”मैं तितली हूं।“
हूँ तो इस दुनिया की पर,
तुम्हें किसी और जहां की,
यूँ लगती हूँ,कि एक दिन मुझ में,
एक अनोखी शक्ति छाई थी ।
मुझे भी प्रेम की परिभाषा समझ आई थी ।
और यह समझ आया था,
कि ईश्वर ने यह संसार प्रेम के लिए सजाया था।
तो मैं भी उसका एक हिस्सा हूँ ।।
उस दिन उस प्रेम की ताकत ने,
मुझे बिल्कुल बदल डाला।
एहसास होते ही, सचमुच ‘उसने’ मुझ में रंग भर दिऐ
मेरी बदसूरती को सिर्फ एक पल में,
खूबसूरती में बदल दिया।।
मैं तितली बन गई ।।
अब प्रेम का संदेश लेकर बगिया में इठलाती हूँ ।
और तेरे मेरे मन को, बस प्रेम का पाठ पढ़ाती हूँ।।

इरेडा
IREDA

रिज़वान अतहर
कार्यकारी सचिव
इरेडा, नई दिल्ली

# जलवायु परिवर्तन की ओर हमारी दिल्ली

सरकार ने वर्ष 2022 तक दिल्ली और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) सहित देश में 40 गीगावाट ग्रिड कनेक्टेड रूफटाप सौर क्षमता स्थापित करने का लक्ष्य रखा है। दिल्ली सरकार द्वारा अधिसूचित दिल्ली सौर नीति, 2016 के अनुसार, वर्ष 2020 तक 1 गीगावाट सौर ऊर्जा और दिल्ली में वर्ष 2025 तक 2 गीगावाट सौर ऊर्जा लगाने का लक्ष्य रखा गया है।

सरकार ने पूरे देश में 2022 तक 100 गीगावाट सौर क्षमता स्थापित करने का लक्ष्य रखा है। वर्ष 2022 तक 175 गीगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता स्थापित करने का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें सौर से 100 गीगावाट, विंड से 60 गीगावाट, बायो पावर से 10 गीगावाट और स्माल हाइड्रो पावर से 5 गीगावाट लगाने का लक्ष्य रखा गया है।

जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना, प्रधानमंत्री की परिषद द्वारा तैयार एक नीति का दस्तावेज है। इसे यह ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है कि भारत के आर्थिक संसाधनों का पारिस्थितिक संतुलन रखा जा सके।

संघ सरकार ने 2009 में (एन.ए.पी.सी.सी) तैयार किया था और राज्यों से अपनी विशिष्ट योजना तैयार करने को कहा था। हमारी दिल्ली जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्रवाई (एन.ए.पी.सी.सी) के तहत राज्य के जलवायु परिवर्तन कार्य (एस.ए.पी.सी.सी) के अधीन आती है ।

विभिन्न विभागों के लिए निर्धारित लक्ष्य यह हैं।

1) ऊर्जा और पावर ऊर्जा कुशल बनाने के लिए बिल्डिंग को फिर से तैयार करना
2) 2050 तक 500 ग्रीन बिल्डिंग बनाना
3) 5000 ऊर्जा मित्र- वे छात्र जो उपभोक्ताओं की ऊर्जा के उपयोग को कम करने में मदद करेंगे
4) अक्षय ऊर्जा मिश्रण - 13: से 50: तक बढ़ाना

**परिवहनः**

1) 2020 तक सार्वजनिक परिवहन के उपयोग को 50ः से बढ़ाकर 73ः करना
2) पर्याप्त गैर मोटर चालित और मध्यवर्ती सार्वजनिक परिवहन के लिए रेट्रोफिट सड़कें
3) पार्किंग स्थलों का डिजिटलीकरण
4) रिंग रोड को फिर से सुचारु रूप से उपयोग में लाना और अधिक स्टेशन जोड़ना

**पानीः**

1) 2030 तक संस्थागत भवनों में 100ः पानी की रीसाइक्लिंग
2) 2030 तक संस्थागत भवनों में 100ः वर्षा जल संचयन
3) इंटर सेप्टोर सीवर के माध्यम से 100ः व्यर्थ पानी का उपचार
4) सभी घरों को सीवर प्रणाली से जोड़ा जाना

**शहरी नियोजनः**

1) इमारतों में ऊर्जा और पानी का अ०डिट।
2) बड़े भवनों के लिए पर्यावरण प्रभाव आंकलन
3) वेस्ट टू एलर्जि प्लांट लगाना और वैज्ञानिक रूप से तैयार लैंडफिल साइटों का निर्माण
4) ग्रीन दिल्ली परियोजनाओं के तहत स्कूलों में सब्जियाँ उगाना।

## जितेंद्र मिश्रा

जीतकी कलम
मयूर विहार–फेज–।, दिल्ली

****मजबूर मजदूर****

समझ नहीं आता कि सदियों से मैं ही क्यों मर रहा हूँ,
मजदूर हूँ मजबूर हूँ क्या इसीलिए ही मर रहा हूँ।

गरीबी को दोष दूँ या महामारी का नाम लगाऊँ,
मरने को पटरी पे लेटूँ या ट्रक पे चढ़ जाऊँ।

लोग कहते हैं की सत्ता का राजमार्ग हमसे ही बना है,
तो फिर हमारे गाँव का मार्ग हमारे खून से ही क्यों सना है।

अरे बच्चे भूखे हैं बेहाल हैं तड़पती है आत्मा मेरी,
पैदल चल रहे हैं पैरों में छाले हैं और ये बेदर्द दुपहरी।

सुना है टी वी पे सिर्फ हमारा ही चर्चा हो रहा है,
हम मर रहें हैं लेकिन हमीं पे खर्चा हो रहा है।

हो जाए बहस पूरी तो कुछ काम भी कर लेना,
मजदूर की मजबूरी का कुछ ध्यान भी धर लेना।

माना हमें अकल नहीं है गरीबों में होती भी कहाँ है,
बस हमें वो चौखट दिखा दो हमारी उम्मीद जहाँ है।
#JeetKiKalam #Majdoor #KillerCorona

इरेडा
IREDA

रोहित गुप्ता
जन सम्पर्क अधिकारी,
इरेडा

# भारत माता के लाल की जमीं का यादगार सफर

अभी कुछ दिन पहले 23 मार्च की ही बात है। सुबह उठने के थोड़ी देर बाद जैसे ही मोबाइल फोन में शहीद दिवस से जुड़े कुछ मैसेज देखे तो आँखों के सामने 13 साल पहले की सुनहरी यादें ताजा हो गईं। भगत सिंह के जीवन और उनकी विचार धारा से कालेज के हम कुछ दोस्त बहुत प्रभावित थे। एक दिन भगत सिंह पर चर्चा करते-करते ठान लिया कि भारत मां के इस लाल की जमीं पर होकर आएंगे। बस निकल पड़े। दिल्ली के कश्मीरी गेट बस अड्डे से देर रात बस रवाना हुई। रोहतक, सिरसा और मुक्तसर होते हुए हम 4 युवा अगले दिन, यानी 23 मार्च की सुबह फिरोजपुर पहुंचे। आसमान में बिखरा केसरिया रंग, ताजी ठंडी हवा के झोंके और सबसे बढ़कर हमारी इस यात्रा का मकसद। रोमांच से रोंगटे खड़े हो रहे थे। 23 मार्च का दिन जो था। हमारे देश के उन 3 महान क्रांतिकारियों का शहीद दिवस, जिन्हें हम भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव के नाम से जानते हैं।

पंजाब में फिरोजपुर से करीब 10 किमी दूर भारत-पाकिस्तान बार्डर (हुसैनी वाला बार्डर) पर उनका समाधि स्थल बना हुआ है। बस में सवार होकर हम हुसैनी वाला की ओर चल पड़े। आंखों के सामने अब दूर तक फैले खेत-खलिहानों और छोटे-छोटे गांव-पिंडों के नजारे थे। रास्ते में बस एक रेलवे फाटक पर रुकी। स्थानीय लोगों ने बताया कि बंटवारे से पहले यह रेल लाइन फिरोजपुर से पाकिस्तान के कसूर शहर तक जाती थी। 1960-70 के दशक तक भारत-पाक के बीच हुसैनी वाला बार्डर ही कारोबार का प्रमुख रास्ता होता था, लेकिन बाद में इसे बंदकर अमृतसर के नजदीक वाघा बार्डर ने इसकी जगह ले ली। कुछ देर बाद एक पुल आया। नीचे सतलुज बह रही थी। सन 1931 में 23 मार्च ही के दिन शाम साढ़े सात बजे के आसपास अंग्रेजों ने तीनों क्रांतिकारियों को धोखे से समय से पहले

फांसी पर लटका दिया था। जेल के बाहर लोगों को इस का पता न चल जाए, इसके लिए जेल की पिछली दीवार को तोड़कर इसी सतलुज के किनारे लाशो ंको जलाने की कोशिश की। हालांकि आसपास के गांवों में खबर फैल गई। गांव वालों के पहुंचने से पहले ही अंग्रेज भाग खड़े हुए। इसके बाद गांव के लोगों ने पूरे सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार किया। आज उसी जगह के पास समाधि स्थल बना हुआ है और वह जेल अब पाकिस्तान में है। समाधि स्थल पर तीनों क्रांतिकारियों की मूर्तियां देखकर दिल में भावनाओं का ज्वार उमड़ रहा था।

यहीं भगत सिंह की मां माता विद्यावती की समाधि भी है। पंजाब सरकार ने इस वीर जननी को पंजाब माता की उपाधि दी है। भगत सिंह के एक और क्रांतिकारी साथी बटुकेश्वर दत्त की समाधि भी यहीं है। शहीद दिवस पर यहां एक विशाल आयोजन होना था। पैदल, साइकल, टैक्टर ट्रालियों और बसों में भरकर सैकड़ों लोग यहां पहुंच रहे थे। प्रशासन भी हर साल हुसैनी वाला के लिए विशेष रेलगाड़ी और बसों का इंतजाम करता है। समाधि स्थल के साथ ही भारतीय सेना के बंकर बने हुए हैं। यहां से महज आधा किमी दूर पाकिस्तान का गांव गंदा सिंह वाला (जिलाकसूर, पंजाब) है। उधर के खेतों में काम करते किसानों को यहां से साफ देखा जा सकता है। वाघा की तरह हुसैनी वाला बार्डर पर भी शाम को बीटिंगरिट्रीट का आयोजन होता है, जिसमें दोनों देशों की सेनाएं वीरता दिखाती हैं। हालांकि यहां हम पाकिस्तान के ज्यादा नजदीक थे। दरअसल, वाघा में दोनों देशों के बीच कुछ मीटर खाली जमीन है, जिसे नो मैंस लैंड कहा जाता है, जब कि यहां दोनों देशों को महज दो इंच मोटी एक रेखा अलग करती है। दो इंच की इस रेखा ने वाकई काफी कुछ बांट दिया था। उस पार सैनिक चौकी पर जिन्ना की तस्वीर लगी थी, तो यहां महात्मा गांधी की। उस तरफ की वर्दी सलेटी थी, तो यहां खाकी। हमारी घड़ी में शाम

के 5:30 बज रहे थे, जब कि वहां इसकें अलावा सब-कुछ एक जैसा। वही लोग, वही भाषा, वही खेत, वही फसल, वही सतलुज, वही पंछी, वही हवा... जिसका सपना हमारे महान क्रांतिकारियों ने देखा था! अचानक पाकिस्तानी रेंजरों और भारतीय बी एस एफ के जवानों के बूट जमीन पर पटकने का जोरदार सिलसिला शुरू होगा या और हम हकीकत में लौट आए। इधर हम थे और लकीर के उस पार पाकिस्तानी!

आलर कुल्लू
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
इरेडा

# संत कबीर दास

कबीरदास हिंदी साहित्ये के इतिहास के अनुसार भक्ति कालीन कवि, संत और समाज सुधारक हैं । वे निगुर्ण भक्तिइधारा के ज्ञानाश्रेणी शाखा के प्रर्वतक कवि हैं । इसके जन्मक के संबंध में अनेक प्रकार के प्रवाद प्रचालित है । कहा जाता है कि काशी में स्वांमी रामानंद का एक भक्तक ब्राह्मण था जिसकी विधवा कन्याि को स्वातमी जी ने पुत्रवती होने का आशीर्वाद भूल से दे दिया फल यह हुआ कि उसे एक बालक उत्प्न्नक हुआ जिससे वह लहरतारा के पास फेंक आई। नीरू या अली नाम का जुलाहा उस बालक को अपने घर उठा लाया और पाल पोसकर बड़ा किया । यही बालक आगे चलकर कबीरदास हुआ । उनका कहना है कि वे प्रसिद्ध सूफी मुसलमान फकीर शंख तकी से दीक्षा ली थी ।

कबीरदास निगुर्ण धारा के ज्ञानाश्रेणी शाखा के प्रर्वतक कवि हैं । उन्हों ने उस राम नाम की महिमा जाप, ताप और उपासना की है, जो निगुर्ण है, जिसका कोई आकार-प्रकार और रूप नहीं है । उनका राम पृथ्वीह के कण-कण में विराजमान हैं, सर्वव्यापपी है । कबीरदास कहते हैं - ''निर्गुण राम जपहु रे भाई''

कबीरदास जी ने अपने संत सम्प्रंदाय में गुरू को ब्रहम से भी बड़ा और महान बतलाया है । गुरू ही एक ऐसा माध्ययम है जिसके द्वारा भगवान तक पहुंचा जा सकता है । गुरू की महत्तू को बतलाते कहते हैं :-

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय।
बलिहारी गुरू अपने गोविन्द दियो बताय।।

कबीरदास एक समाज सुधारक भी थे। वे समाज में प्रचलित छूआ-छूत, ऊंच-नीच, जाति-पाति का घोर विरोधी थे । वे समाज में समानता लाना चाहते थे, वे कहते हैं -

जात-पात पूछेना कोई।
हरि को भजे सो हरि का होई।।

कबीरदास जी कर्मकण्ड।, तीर्थ, व्रत उपवास आदि समाज में प्रचलित प्रथाओं का खण्डमन करते रहे, उन्होंरने मुसलमानों और हिंदुओं के बीच व्रत उपवास का खण्डओन करते हुए कहते हैं –
दिन भर रोजा रहत हैं, रात हनत हैं गाय द्य
ये तो खून वो बंदगी, कैसे खुशी खुदाय ।।

कस्तूरी कुंडल बसे मृग ढूँढत बन माहि ।
ज्यों घट घट में राम हैं दुनिया देखत नाहि ।।

कबीरदासजी उस समय समाज में प्रचलित विभिन्न। प्रकार के कर्मकण्ड और मूर्तिपूजा आदि के विरोधी रहे । वे कहते हैं –

पाथर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजू पहाड़ ।
घर की चाकी कोई ना पूजे, जाको पीस खाए संसार ||

कबीरदास अपनी ज्ञानाश्रेणी शाखा के संत सम्प्र दाय के अंतर्गत कर्म, ज्ञान और भाक्तिख पर जो देते हैं जो कि धर्म का महत्वकपूर्ण तत्वद है । वे विश्ववधर्म की स्थातपना करना चाहते थे जिसका मूल आधार है मन की पवित्रता । वे मानव को विश्व ।व्या पी धर्म के सूत्रों में पिरोना चाहते हैं जिसमें जाति, धर्म, वर्ग या वर्ण संबंधी भेद न हो । कबीरदासजी के अनुसार पंडित और ज्ञानी वही है जो इस वाणी में पूर्ण होती है –

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय ।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।।

आज विश्व कई वर्गों में विभाजित है कुछ देश विकसित है तो कुछ विकासशील । आज का आधुनिक युग विज्ञान का युग है । विज्ञान के नये–नये अविष्कार हो रहे हैं और आवश्यकताओं और विलासित वस्तुओं की आपूर्ति हो रही है । आज एक नये समाज का भी निर्माण हो रहा है वह वर्ग है – पूंजीपति वर्ग, मध्यमवर्ग, निम्नवर्ग, मजदूर वर्ग आदि । आज इस युग में सबसे अधिक ग्रस्त है मध्यमवर्ग और श्रमिक वर्ग । आज के दिन कबीर दास जी का आर्थिक परिकल्पना और अधिक प्रसंगिक हो जाता है । कबीरदासजी कहते हैं कि

साईं इतना दीजिये, जा मे कुटुम समाय ।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु ना भूखा जाय ||

नरेश वर्मा
उप महाप्रबंधक (एचआर),
इरेडा

# रामायण कथा का एक अंश
# जिससे हमे सीख मिलती है ''एहसास'' की

श्री राम, लक्ष्मण एवम् सीता' मैया चित्रकूट पर्वत की ओर जा रहे थे,
राह बहुत पथरीली और कंटीली थी !
की यकायक श्री राम के चरणों मे कांटा चुभ गया !

श्रीराम रूष्ट या क्रोधित नहीं हुए, बल्कि हाथ जोड़कर धरती माता से अनुरोध करने लगे !
बोले- ''माँ, मेरी एक विनम्र प्रार्थना है आपसे, क्या आप स्वीकार करेंगी ?''

धरती बोली- ''प्रभु प्रार्थना नहीं, आज्ञा दीजिए !''
प्रभु बोले, ''माँ, मेरी बस यही विनती है कि जब भरत मेरी खोज मे इस पथ से गुजरे,
तो आप नरम हो जाना !
कुछ पल के लिए अपने आँचल के ये पत्थर और कांटे छुपा लेना !
मुझे कांटा चुभा सो चुभा, पर मेरे भरत के पाँव मे आघात मत करना''

श्री राम को यूँ व्यग्र देखकर धरा दंग रह गई !
पूछा- ष्भगवन, धृष्टता क्षमा हो ! पर क्या भरत आपसे अधिक सुकुमार है ?
जब आप इतनी सहजता से सब सहन कर गए, तो क्या कुमार भरत सहन नही कर पाँएगें ?
फिर उनको लेकर आपके चित मे ऐसी व्याकुलता क्यों ?''

श्री राम बोले– ‘‘नही...नही माते, आप मेरे कहने का अभिप्राय नही समझीं !
भरत को यदि कांटा चुभा, तो वह उसके पाँव को नही,
उसके हृदय को विदीर्ण कर देगा !’’
‘हृदय विदीर्ण!! ऐसा क्यों प्रभु ?’,
धरती माँ जिज्ञासा भरे स्वर में बोलीं !
‘अपनी पीड़ा से नहीं माँ,
बल्कि यह सोचकर कि...
इसी कंटीली राह से मेरे भैया राम गुजरे होंगे और ये शूल उनके पगों मे भी चुभे होंगे !
मैया, मेरा भरत कल्पना मे भी मेरी पीड़ा सहन नहीं कर सकता,
इसलिए उसकी उपस्थिति मे आप कमल पंखुड़ियों सी कोमल बन जाना..!!’

अर्थात
रिश्ते अंदरूनी एहसास, आत्मीय अनुभूति के दम पर ही टिकते हैं ।
जहाँ गहरी आत्मीयता नही, वो रिश्ता शायद नही परंतु दिखावा हो सकता है ।

इसी लिए कहा गया है कि...
रिश्ते खून से नहीं, परिवार से नही,
मित्रता से नही, व्यवहार से नही,
बल्कि... सिर्फ और सिर्फ आत्मीय ‘‘एहसास’’ से ही बनते और निर्वहन किए जाते हैं।
जहाँ एहसास ही नहीं,
आत्मीयता ही नहीं ..
वहाँ अपनापन कहाँ से आएगा ।

इरेडा
IREDA

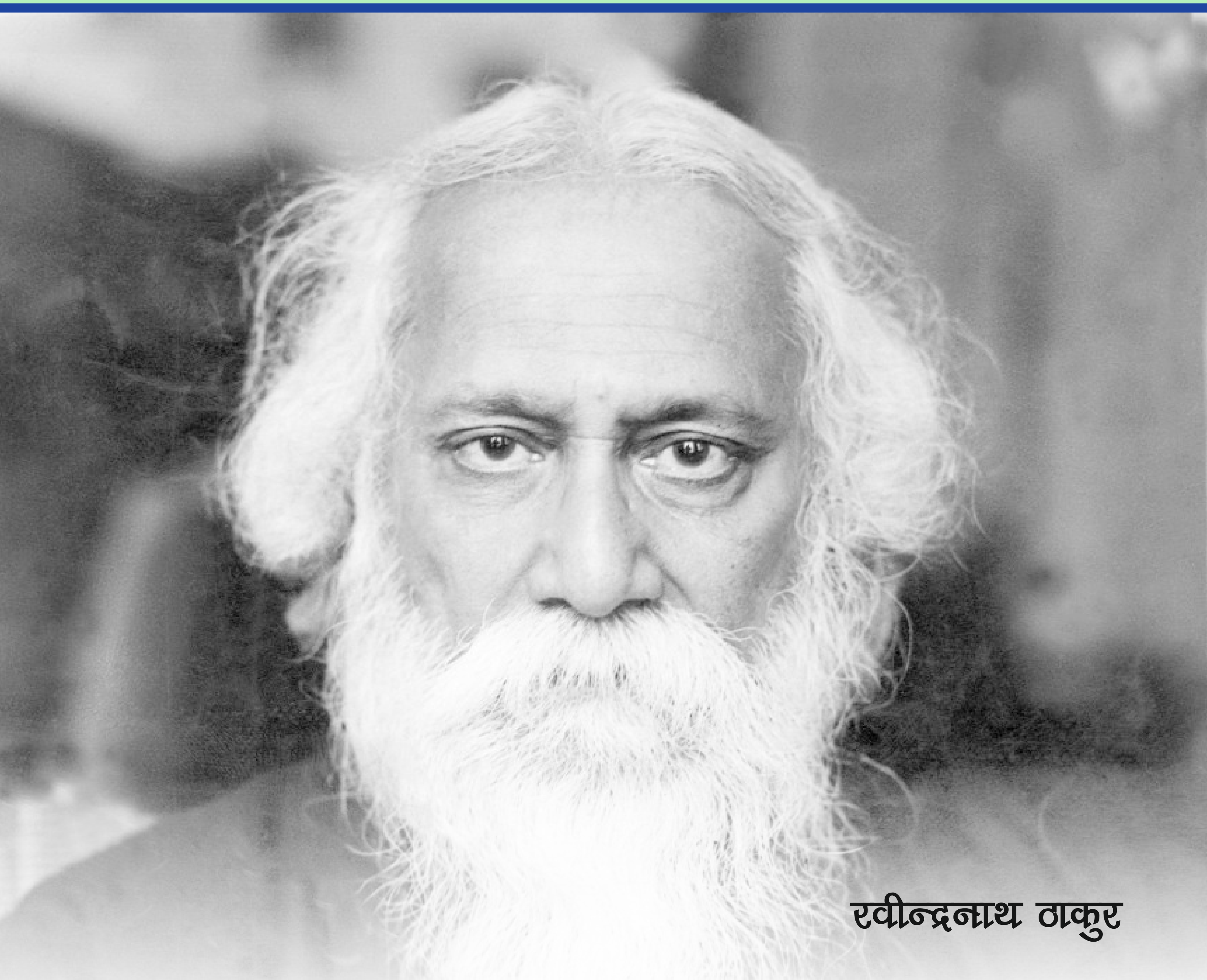

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

# भारतीय भाषाएँ नदियां है और हिंदी महानदी।

डॉ गौतम कुमार मीणा
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
ओरिएंटल इंश्योरेंस कंपनी लि0, दिल्ली

# आशा के बीजों की खेती

मैं करता हूँ, आशा के बीजों की खेती
मै करता हूँ, आशा के बीजों की खेती,

चाहे धरती बंजर हो या फिर हो पत्थीरीली
साहस का मै हल चलाता,

अपने पथ पर चलता रहता
युगों-युगों से मानवता का पथ में आलोकित करता,

आशा के बीजों में प्रेम रस भर लाता
चारों और दूर-दूर तक धरती में बीज फैलाता,

श्रद्धा के जल से सिंचित उनको मैं, हूँ करता
आशा की किरणों से उष्मात उन्हें मैं, हूँ देता,
सीना ताने खोल तोड़कर धरती पर इठलाती पौध,

मैं करता हूँ, आशा के बीजों की खेती
मैं करता हूँ, आशा के बीजों की खेती,

चाहे धरती बंजर हो या फिर हो पत्थीरीली
आशा के बीजों की खेती युगों-युगों लहलहायेगी
साहस का मैं हल चलाता, अपने पथ पर चलता रहता,

मैं करता हूँ, आशा के बीजों की खेती
मैं करता हूँ, आशा के बीजों की खेती।।

विवेक द्विवेदी
उप महाप्रबंधक
भारतीय कृत्रिम अंग निर्माण निगम (एलिम्को)
कानपुर

# वो आई थी क्या

मैं रोजगार के सिलसिले में,
कभी कभी उसके शहर जाता हूँ,
तो गुजरता हूँ उस गली से,
वो नीम तरीकसी गली।

और उसी के नुक्कड़ पे,
ऊंघतासा पुराना खम्बा,
उसी के  नीचे तमाम सब, इंतजार करके,
मैं छोड़ आया था, शहर उसका।
बहुत ही खस्ता सी,
रौशनी की छड़ी को टेके,
वो खम्बा अब भी वही खड़ा है,
फितूर है ये, मगर,

मैं खम्बे के पास जाकर,
नजर बचा के मोहल्ले वालों की,
पूछ लेता हूँ, आज भी ये,
वह मेरे जाने के बाद भी आई तो नहीं थी,
वो आई थी क्या।

परवेश शर्मा
मुख्य प्रबंधक (सतर्कता),
इरेडा

# बिच्छू घास (नेटल)

बिच्छू घास को अंग्रेजी में नेटल (नेटल) कहा जाता है। इसका बोटनिकल नाम अर्टिका डाइओका (Urtica dioica) है। कुमाऊंनी में इसे सिसूण कहते हैं। वह विशुद्ध कुमाऊंनी शब्द है। बिच्छू घास उत्तराखंड और मध्य हिमालय क्षेत्र में होती है। यह घास मैदानी इलाकों में नहीं होती। बिच्छू घास में पतले कांटे होते हैं। यदि किसी को छू जाये तो इसमें बिच्छू के काटने जैसी पीड़ा होती है और बहुत लगने से सूजन आजाती है। इसका प्रयोग सजा देने के लिए भी होता रहा है।

**बिच्छू घास किस काम आती है?**

उत्तरा खंड मैं 5-7 साल पहले तक इसका उपयोग स्थानीय लोग किसी को सजा देने के लिए करते थे और जो थोड़ा बहुत जड़ी बूटी का ज्ञान रखते हैं वो बुखार आने, शरीर में कमजोरी होने, तंत्र-मंत्र से बीमारी भगाने, पित्तदोष, गठिया, शरीर के किसी हिस्से में मोच, जकड़न और मलेरिया जैसे बीमारी को दूर भागने में उपयोग करते हैं। बिच्छू घास की पत्तियों पर छोटे-छोटे बालों जैसे कांटे होते हैं। पत्तियों के हाथ या शरीर के किसी अन्य अंग में लगते ही उसमें झनझनाहट शुरू हो जाती है, जो कंबल से रगड़ने या तेल मालिश से ही जाती है। अगर उस हिस्से में पानी लग गया तो जलन और बढ़ जाती है।
बिच्छूघास के बीजों को पेट साफ करने वाली दवा के रूप में प्रयोग किया जाता है।

**पर्वतीय क्षेत्रें में इस की साग-** सब्जी भी बनायी जाती है। इस की तासीर गर्म होती है और यदि हम स्वाद की बात करे तो पालक के साग की तरह ही स्वादिष्ट भी होती है इसमें विटामिन ए, बी, डी आइरन (आयरन), कैल्सियम और मैगनीज प्रचुर मात्रा में होता है. माना जाता है कि बिच्छू घास में काफी आयरन होता है। जिसे हर्बल डिश कहते हैं।

आम तौर पर दो वर्ष की उम्र वाली बिच्छू घास को गढ़वाल में कंडाली व कुमाऊं में सिसूण के नाम से जाना जाता है। अर्टिका के ई वनस्पति परिवार के इस पौधे का वानस्पतिक नाम अर्टिका पर्वी फ्लोरा है। बिच्छू घास स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभप्रद है। इसमें ढेर सारे विटामिन और मिनरल्स हैं। इस में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेड, एनर्जी, कोलेस्ट्रोल जीरो, विटामिनए, सोडियम, कैल्शियम और आयरन हैं।

### अब जल्द ही बिच्छू घास की दवा से होगा बुखार का इलाज :

अगर सब कुछ उम्मीद के मुताबिक रहा तो जल्द बुखार की एक और दवा का इजाद हो जाएगा। यह दवा होगी बिच्छू घास। यह घास पर्वतीय क्षेत्रों में पाई जाती है। अगर इस पर जारी परीक्षण सफल रहे तो उससे जल्द ही बुखार भी भगाया जा सकेगा। वैज्ञानिक इससे बुखार भगाने की दवा तैयार करने में जुटे हैं। प्राथमिक प्रयोगों ने बिच्छू घास के बुखार भगाने के गुण की वैज्ञानिक पुष्टि कर दी है।

### परीक्षण में पैरासीटामोल से भी बेहतर प्राकृतिक दवा :

वैज्ञानिकों का मानना है कि इससे तैयार दवा परीक्षण में पैरासीटामोल से भी 10 गुना ज़्यादा बेहतर साबित हुई है। बुखार भगाने की दवा तैयार करने के लिए किए गए परीक्षण में बिच्छू घास के पत्तों का सत्व निकाल कर पेट्रोलियम, क्लोरोफार्म, ईथर, एसीटोन, मेथेनाल और पानी में मिलाया गया, जिनका परीक्षण चूहों के सात समूहों पर किया गया।

### चूहों पर किया गया परीक्षण :

इन चूहों में पहले कृत्रिम तरीके से बुखार पैदा किया गया। इसके बाद चूहों के एक समूह को पैरासीटामोल के इंजेक्शन दिए गए जबकि अन्य को बिच्छू घास के तत्व वाले घोलो ंके इंजेक्शन लगाए

गए। परीक्षण में सामने आया कि बिच्छू घास पैरासीटामोल से ज्यादा बेहतर काम कर रही है। पैरासीटामोल के इंजेक्शन दिए हुए चूहों की अपेक्षा बिच्छू घास के सत्व के इंजेक्शन लगाए गए चूहों का बुखार जल्दी उतर गया। बिच्छू घास काबु खार खत्म करने वाला गुण एक शोध में सामने आया है।

**बिच्छू घास में काफी आयरन होता है :**

देहरादून स्थित सरदार भगवान सिंह पीजी इंस्टीट्यूट आफ बायोमेडिकल साइंसेज एंड रिसर्च के फार्मास्युटिकल केमिस्ट्री विभाग की दो शोध छात्राएं बिच्छू घास से बुखार भगाने की दवा तैयार करने के लिए परीक्षण में जुटी हैं। प्रिलिमनरी फायटोकेमिकल इंवेस्टिगेशन एंड इ वैल्यूशन आफ ऐंटी पायरेटिक ऐक्टिविटी आन अर्टिका पर्वी फ्लोरा शीर्षक के तहत शोध कर रही प्रियंका पोखरियाल व अनुपमा सजवाण का कहना है कि चूहों पर परीक्षण के बाद अब महज यह देखना है कि किस रसायन के घोलने चूहों के बुखार को जल्दी व बेहतर तरीके से खत्म किया। उनका कहना है कि स्थानीय चिकित्सा पद्धति में बिच्छू बूटी के अन्य इलाजों की वैज्ञानिक पुष्टि के लिए वे अपने प्रयोग जारी रखेंगी। क्या है बिच्छू घास आमतौर पर दो वर्ष की उम्र वाली बिच्छू घास को गढ़वाल में कंडाली व कुमाऊं में सिसूण के नाम से जाना जाता है। अर्टिका के ई वनस्पति परिवार के इस पौधे का वानस्पतिक नाम अर्टिका पर्वी फ्लोरा है। बिच्छू घास की पत्तियों पर छोटे-छोटे बालों जैसे कांटे होते हैं। पत्तियों के हाथ या शरीर के किसी अन्य अंग में लगते ही उसमें झनझनाहट शुरू हो जाती है, जो कंबल से रगड़ने या तेल मालिश से ही जाती है। अगर उस हिस्से में पानी लग गया तो जलन और बढ़ जाती है।

**पर्वतीय क्षेत्रें में बिच्छू घास का प्रयोग तंत्र:**

मंत्र से बीमारी भगाने, पित्तदोष, गठिया, शरीर के किसी हिस्से में मोच, जकड़न और मलेरिया के इलाज में तो होता ही है, इसके बीजों को पेट साफ करने वाली दवा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। पर्वतीय क्षेत्रों में इसका साग भी बनाया जाता है। माना जाता है कि बिच्छू घास में काफी आयरन होता है।

**बिच्छू घास की ताजा चाय की मांग :**

अल्मोड़ा के निकट चितई के पंत गांव में स्थापित कंपनी पिछले डेढ़ साल में बिच्छू घास से बनी 500 किलो चाय देश भर के बड़े शहरों में बेच चुकी है। अभी सालाना उत्पादन करीब चार क्विंटल है। इसका फ्लेवर खीरे की तरह होता है। कंपनी से जुड़ीं कर्नाटक की अमृता बताती हैं कि करीब छह साल पहले पति संतोष व चितई के पंत गांव निवासी डा. वसुधा पंत के सहयोग से पहाड़वासियों के परंपरागत चीजों के मार्केटिंग की योजना बनाई थी। इसी कड़ी में पहाड़ के परंपरागत सिसूण की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए उन्होंने बिच्छू घास की चाय बनाने की सोची। बिच्छू घास की चाय के 50 ग्राम के एक पैकेट की कीमत 110 रुपए है और इस की काफी मांग है।

हम लोग जितना प्रकृति से दूर हो रहे हैं उतनी ही समस्यायों से भी घिर रहे हैं और खास तौर पर बिमारियों की यदि बात करे तो और विदेशी कंपनीज हमारे ही देश की जड़ी बूटी को सस्ते में खरीद कर महारे शहरों में वही दवाई के रूप में हजारों और लाखों रुपए में बेच देती है और ये सारा ज्ञान हमारे बजुर्गों के पास है जिन्हें हम अनदेखा कर रहे हैं और अपनी अमूल्य धरोहर को छोड़कर विदेशी कंपनी की दवाइयां खा रहे हैं इसी तरह गिलोय जो हमें प्रकृति ने दी है जो डेंगू जैसे रोग मे ंमहौषधि की तरह काम करती है यदि हम वो ना लेकर बाहर हास्पिटल में इलाज करवाये तो 10-15 दिन में 25-30 हजार तक खर्च आता है तो इस उम्मीद के साथ की आप अपने आस-पास इन प्रकृति की संपत्ति को पहचान कर उसे सहेज कर रखेंगे और अपने मित्रों को इस की जानकारी देंगे ताकि वो भी लाभान्वित हो सके।

ऋषभ मंगल
सहायक प्रबंधक
वित्त एवं लेखा विभाग, इरेडा

# मां

मां की सरकार
सबसे अच्छी होती है

मां की बोली
सबसे मीठी होती है

मां के संसार में रहना
सबसे सुखद होता है

मां के संसार का
मैं राजकुमार हूं

मां मेरी गलतियां
समझदारी से माफ कर देती है

मां मुझे कभी
भूखा नहीं रखती

मां मुझसे कभी
रूखा बर्ताव नहीं करती

मैं दुख में रहता हूं
तो मां रोती है

मां जब भी मुझे देखती है
तो हंसती है

मां की सरकार
सबसे अच्छी होती है

हमारी सरकारें भी
मां की तरह ही
हंस मुख क्यों नहीं हैं!

IREDA इरेडा

रॉमेश कुमार गुप्ता
सहायक प्रबंधक – वित्त एवं लेखा,
इरेडा

# हे कोरोना

हे कोरोना, हाय कोरोना,
हर जगह सिर्फ रोना ही रोना ।

लोग घबराये ऐसे है,
जैसे कल ही जाना है ।
काम कोई भी हो ना,
ये कैसा बहाना है ।

किसी से भी मिलने से,
अब तो मैं घबराता हूँ ।
हाथ मिला लूँ अगर तो,
दुबारा फिर से नहाता हूँ ।

डर से घर में बैठा हूँ मैं,
बाजार भी नहीं जाता हूँ ।
पर 20 बार दिन में,
हाथों पे जरूर लगाता हूँ ।
सैनिटाइजर

जब भी कोई केस आये,
दिल मेरा रोता है ।
सांस चढ़ जाती है,
मन हो जाता छोटा है ।

हे भगवान, जल्दी से अब,
कोई तो उपाए करो ।
इस कोरोना नाम की बीमारी को,
हमारी जिन्दगी से बाहर करो ।।

इरेडा
IREDA

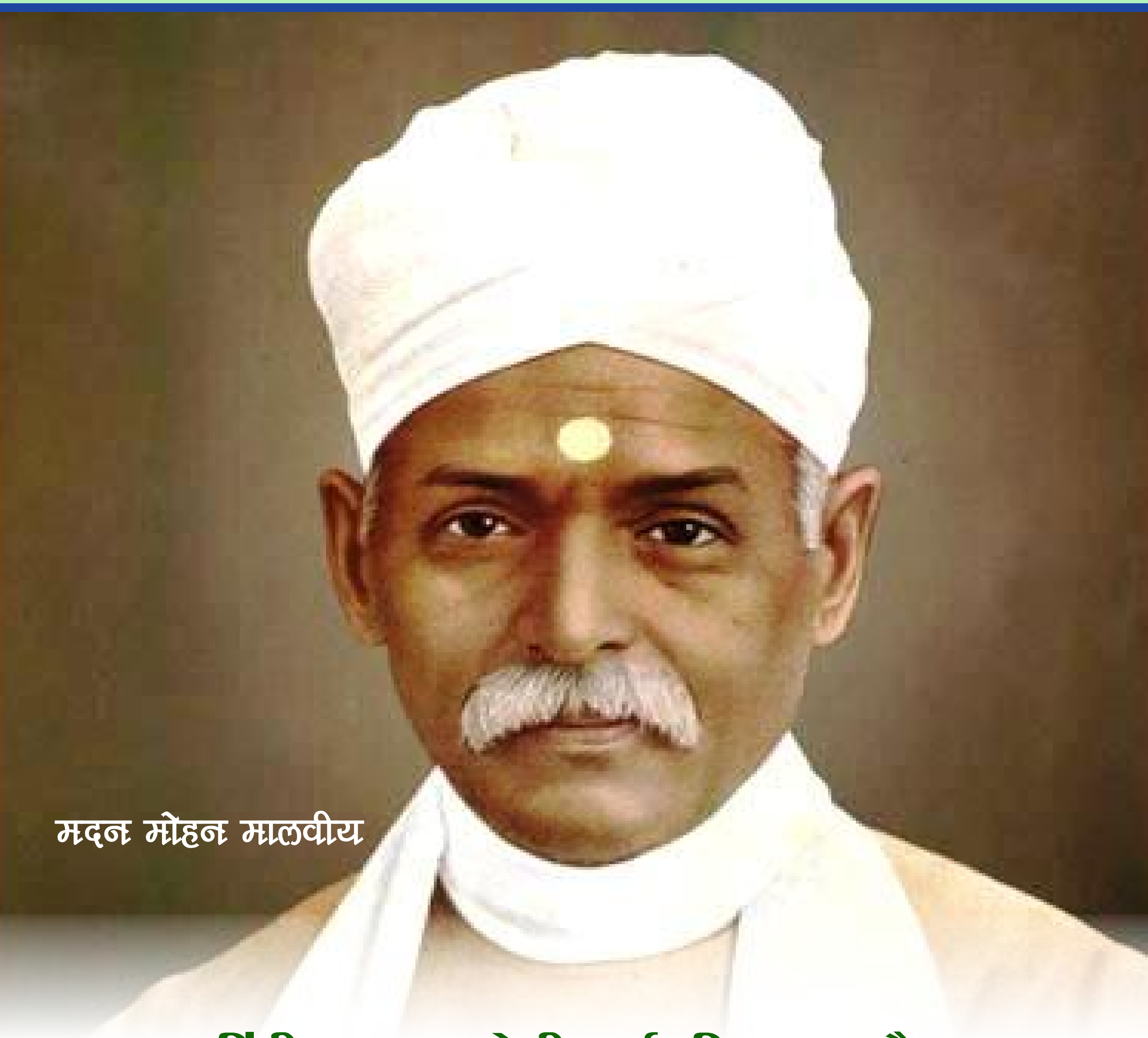


## हिंदी भाषा एक ऐसी सार्वजनिक भाषा है,
## जिसे बिना भेद-भाव प्रत्येक भारतीय ग्रहण कर सकता है।

पीयूष अग्रवाल
सहायक प्रबंधक, वित्त एवं लेखा विभाग,
इरेडा

# "असली आजादी - भ्रष्टाचार से आजादी"

दुनिया वाले हुए भ्रष्ट
यह कैसा संसार है,
हर जगह घोटालों का
यहां तो लगा भंडार है।

पैसे की लालसा ऐसी
बेच दिया अपना स्वाभिमान है,
शर्म कर, ओ अफसर बाबू
वह दरिद्र भी इंसान है।

बचा नहीं उस के पास पैसा
अब क्या जान लेकर मानोगे,
अब तो दे दो उस का प्रमाण पत्र
क्या इसे उसकी अर्थी पर टांगोंगे ?

पैसा-पैसा करते हरदम
क्या साथ लेकर जाओगे ?
क्या ऐसी कमाई करके
खुद से नजर मिलाओगे ?

भागते फिरोगे बाबू
नजर भी नहीं आओगे,
जिस दिन विभाग ने पकड़ा
जीवन भर पछताओगे!

जाएगी नौकरी तुम्हारी,
और जाएगी इज्जत
अभी भी अगर ना सुधरो तो
बेवकूफी है, नहीं ये हिम्मत।

ऐसा पैसा किस काम का
जो लेजा ए तुम्हारी इज्जत,
जरुरते कम करो अपनी तुम
नहीं होगी कोई दिक्कत।

बच्चे तुम्हारे देख देखकर
सीखेंगे यही बाद में,
देश जाएगा डूब बड़े बाबू
आपके लालच की आड़ में।

देने वाला, लेने वाला
सारे ही जिम्मेवार है,
जो ईमानदारी से काम करे
वहीं देश का वफादार है।

ओ दरिद्र नारायण महामानुश
बात मेरी मानिए,
सतर्कता से काम लीजिए
अपने अधिकारों को जानिए।

रिश्वत से आप करो परहेज
काम निजी हो या सरकारी,
शिकायत करो बाबू की ऐसी
न हो हिम्मत अगली बारी।
जब मांगे कोई अफसर
बंगला, पैसा या मोटर गाड़ी,
ऊपर तक लिखो चिट्ठी ऐसी
तपड़ जाए, उसकी नौकरी पर भारी।

आओ हम सब मिलकर
देश के लिए काम करे,
करें झंडा ऊंचा हमारा
विश्व भर में नाम करे।

इस पावन धरती से हमें
भ्रष्टाचार मिटाना है,
भारत मां को असली आजादी
सम्पूर्ण रूप से दिलाना है।

गांधी जी के सपने को
आओ हम साकार करें,
करें झंडा ऊंचा हमारा
विश्व भर में नाम करे।

इरेडा
IREDA

अलका कुमार
प्रबंधक
(मानव संसाधन)

# मुस्कान

मैंने एक फूल से कहाः...
कल तुम मुरझा जाओगगेः..!
फिर क्यों मुस्कुराते हो ..?
व्यर्थ में यह ताजगी ...
किस लिए लुटाते हो ..??

फूल चुप रहा...!!

इतने में एक तितली आई ..!
पल भर आनंद लिया ..!
उड गई ..!!

एक भौंरा आया..!
गान सुनाया ..!
सुगंध बटोरी..!
और आगे बढ गया ..!!

एक मधुमक्खी आई..!
पल भर भिन भिनाई..!
पराग समेटा ..! और ...
झूमती गाती चली गई ..!!

खेलते हुए एक बालक ने ...
स्पर्श सुख लिया ..!
रूप-लावण्य निहारा..!
मुस्कुराया.!
और...
खेलने लग गया..!!

तब फूल बोलाः-----
मित्रः !
क्षण भर को ही सही...
मेरे जीवन ने कितनों...
को सुख दिया ..!
क्या तुमने भी कभी..?
ऐसा किया..???

कल की चिन्ता में ...
आज के आनंद में ...
विराम क्यो करूँ..?
माटी ने जो ...
रूपय रंगय रसय गंध दिए ..!
उसे बदनाम क्यो करूँ..?

मैं हँसता हूँ..! क्योंकि...
हँसना मुझे आता हैं ..!
मैं खिलता हूँ..! क्योंकि ...
खिलना मुझे सुहाता हैं ..!

मैं मुरझा गया तो क्या ..?
कल फिर एक ...
नया फूल खिलेगा ..!
न कभी मुस्कान रुकी हैं ..
नही सुगंध ...!!

जीवन तो एक सिलसिला है ..
!
इसी तरह चलेगा :!!

खुश रहिये ..!
मुस्कुराते रहिये ..!
और अपनों को भी ...
खुश रखिए ..!!

इरेडा
IREDA

सरबजीत कौर
उप प्रबंधक (एचआर),
इरेडा

# ईमानदारी का जीवन

बेंजामिन फ्रेंकलिन ने कहा है – **Honesty is the Best policy** अर्थात ईमानदारी सर्वश्रेठ नीति है। इस नीति को अपनी नियति क्यों और कैसे बनाया जाये, आइये इसके बारे में चर्चा करते हैं।

बुराई की मिसाल ऐसी है जैसे पहाड़ से नीचे उतरना , एक कदम उठाओ तो बाकी उठते चले जाते हैं। अच्छाई की मिसाल ऐसी है जैसे पहाड़ पर चढ़ना, हर कदम पिछले कदम से ज्यादा मुश्किल मगर हर कदम पर बुलंदी मिलती है। इसी लिए हमें हमेशा अच्छाई और सच्चाई का साथ देना चाहिए क्योंकिः

अकाल हो अगर अन्न का, तो मानव मरता है
अकाल हो अगर संस्कारों का, तो मानवता मरती है

ईमानदारी हमारे संस्कारों की विरासत है जिसकी दीप्ति हमारे व्यव्हार से तरंगित होकर हमें करोड़ो में एकबनाती है। ईमानदारी का लेन देन केवल पैसों से न होकर हमारे जीवन के हर काम से है। हमें खुद से और अपने सपनो से भी ईमानदार होना चाहिए। ईमानदारी हमें सरलता से जीवन जीने में मदद करती है वहीं बेईमानी हमें दिखावे के दलदल में धकेलती है। मैं मानती हूँ की आधुनिक परिवेश में ईमानदारी के साथ जीना आसान नही है। कहा जाता है ।
झूठ मजे में है

सच कटघरे में है
झूठे महफिलों में हैं
सच्चे तन्हाइयों में।

परन्तु इसका यह मतलब नहीं है की हम ईमानदार न बन। ईमानदारी का जीवन जीने से हमें आत्म संतुष्टि मिलती है ।

वो जो ईमानदार होते हैं
वे अक्सर रोते हैं
पर चैन की नींद वही सोते हैं

आखिरकार, एक ईमानदार व्यक्ति ही तो कह सकता है ।

माना की बहुत मुश्किल से जिंदगी का बोझ उठता हूँ
पर साहब, बेईमानी से नही, इज्जत से रोटी खाता हूँ

ईमानदार व्यक्ति समाज को प्रिय होता हैद्य वह सबका विश्वास पात्र बनता हैः भरोसेमंद होने के कारण सभी रिश्तों की नीव भी मजबूत होती है। ईमानदार लोग बहुत ही निर्भीक और निडर होने के साथ ही आत्मविश्वास से लबरेज होते हैं ।

वही बईमान व्यक्ति तो समाज के लिए बोझ होते हैं। उनकी आत्मा उनको कचोटती रहती है। गलत तरीके से कमाया हुआ धन ऐश्वर्या परिवार के बच्चों के अच्छे मानसिक विकास में अवरोश उत्पन्न करता है। ऐसे व्यक्ति समाज के लिए भी ठीक नहीं होते।

आइये दोस्तों, हम ईमानदारी को एक नीति न समझकर अपने दैनिक जीवन में अनुसरण करके इसे अपनी नियति बना लें ।

एस के डोंगरा
विधि विभाग
इरेडा

# तुलसी कौन थी ?

तुलसी (पौधा) पूर्व जन्म में एक लड़की थी जिसका नाम वृंदा था, राक्षस कुल में उसका जन्म हुआ था बचपन से ही भगवान विष्णु की भक्त थी। बड़े ही प्रेम से भगवान की सेवा, पूजा किया करती थी। जब वह बड़ी हुई तो उनका विवाह राक्षस कुल में दानव राज जलंधर से हो गया। जलंधर समुद्र से उत्पन्न हुआ था। वृंदा बड़ी ही पति व्रता स्त्री थी सदा अपने पति की सेवा किया करती थी. एक बार देवताओं और दानवों में युद्ध हुआ जब जलंधर युद्ध पर जाने लगे तो वृंदा ने कहा, स्वामी आप युद्ध पर जा रहे है आप जब तक युद्ध में रहेगे में पूजा में बैठकर आपकी जीत के लिये अनुष्ठान करुंगी, और जब तक आप वापस नहीं आ जाते, मैं अपना संकल्प नहीं छोडूगी। जलंधर तो युद्ध में चले गये, और वृंदा व्रत का संकल्प लेकर पूजा में बैठ गयी, उनके व्रत के प्रभाव से देवता भी जलंधर को ना जीत सके, सारे देवता जब हारने लगे तो विष्णु जी के पास गये। सबने भगवान से प्रार्थना की तो भगवान कहने लगे कि वृंदा मेरी परम भक्त है में उसके साथ छल नहीं कर सकता। फिर देवता बोले – भगवान दूसरा कोई उपाय भी तो नहीं है अब आप ही हमारी मदद कर सकते है। भगवान ने जलंधर का ही रूप रखा और वृंदा के महल में पँहुच गये जैसे ही वृंदा ने अपने पति को देखा, वे तुरंत पूजा मे से उठ गई और उनके चरणों को छू लिए, जैसे ही उनका संकल्प टूटा, युद्ध में देवताओ ने जलंधर को मार दिया और उसका सिर काटकर अलग कर दिया, उनका सिर वृंदा के महल में गिरा जब वृंदा ने देखा कि मेरे पति का सिर तो कटा पड़ा है तो फिर ये जो मेरे सामने खड़े हैं ये कौन हैं ? उन्होंने पूँछा – आप कौन हो जिसका स्पर्श मैंने किया, तब भगवान अपने रूप में आ गये पर वे कुछ ना बोल सके, वृंदा सारी बात समझ गई, उन्होंने भगवान को श्राप दे दिया आप पत्थर के हो जाओ, और भगवान तुंरत पत्थर के हो गये। सभी देवता हाहाकार करने लगे लक्ष्मी जी रोने लगे और प्रार्थना करने लगे यब वृंदा जी ने भगवान को वापस वैसा ही कर दिया और अपने पति का सिर लेकर वे सती हो गयी।

उनकी राख से एक पौधा निकला तब भगवान विष्णु जी ने कहा कि आज से इनका नाम तुलसी है, और मेरा एक रूप इस पत्थर के रूप में रहेगा जिसे शालिग्राम के नाम से तुलसी जी के साथ ही पूजा जायेगा और में बिना तुलसी जी के भोग स्वीकार नहीं करुँगा। तब से तुलसी जी कि पूजा सभी करने लगे। और तुलसी जी का विवाह शालिग्राम जी के साथ कार्तिक मास में किया जाता है. देव-उठावनी एकादशी के दिन इसे तुलसी विवाह के रूप में मनाया जाता है

इरेडा
IREDA

जितेंद्र मिश्रा

जीतकी कलम

मयूर विहार–फेज–I, दिल्ली


# नारी शक्ति का सम्मान, महिला दिवस

हे सकल सृष्टि की मूल धरा,तेरा हरदम सम्मान हो,
तेरी त्याग तपस्या का,हर एक दिल मे अभिमान हो।
जब जना शिशु को अतिपीड़ा से,दुनियाँ में तू माँ कहलाई,
निज स्तन से अमृत पान दिया,जीवन की राह दिखलाई।
हुए बड़े हम बड़े गर्व से,एक बेटी ब्याह के संग आई,
निज गाँव त्याग निज नाम त्याग,नव आँगन में वो मुस्काई।
प्रबल स्तम्भ परिवार का,परिवार की नारी होती है,
निजकुटुम्ब के हर पुष्प को,एक माला में पिरोती है।
कोई क्षेत्र ऐसा नहीं,जँहा नारी के पग चिन्ह नहीं,
ये पुरुषों की सहगामी,पुरुषों से कदापि भिन्न नहीं।
झांसी वाली रानी हो या आसमान की कल्पना,
मानवता की टेरेसा हो या रक्षा करती निर्मला।
हो चिंघाडती मैरी कोम या शतकवीर मिथाली हो,
हे मातृशक्ति हे जगजननी,तू अतुलित बलशाली हो।
वायुयान उड़ाना हो या सेना का मान बढ़ाना हो,
देश को सेवा देनी हो या काम कोई भी ठाना हो।
नारी की इच्छाशक्ति ने,तूफानों का भी रुख मोड़ दिया,
जो भी उसने ठान लिया,पाने को सबकुछ झोंक दिया।
आओ बेटी का सम्मान करें ,महिलाओं का मान धरें।
बहनों को जीने दें सुस्वप्न,और माँओं का गुणगान करें।
सिर्फ एक दिवस नहीं महिलाओं का,इनका तो पूरा वर्ष है।
जँहा नमन होता माँ बहनों का,वहाँ चौतरफा होता हर्ष है।
हे सकल सृष्टि की मूल धरा,तेरा हरदम सम्मान हो,
तेरी त्याग तपस्या का,हर एक दिल मे अभिमान हो।

सभी नारिशक्तियों को परम सम्मान , बधाई व शुभकामनाएं। #महिलादिवस

इरेडा
IREDA

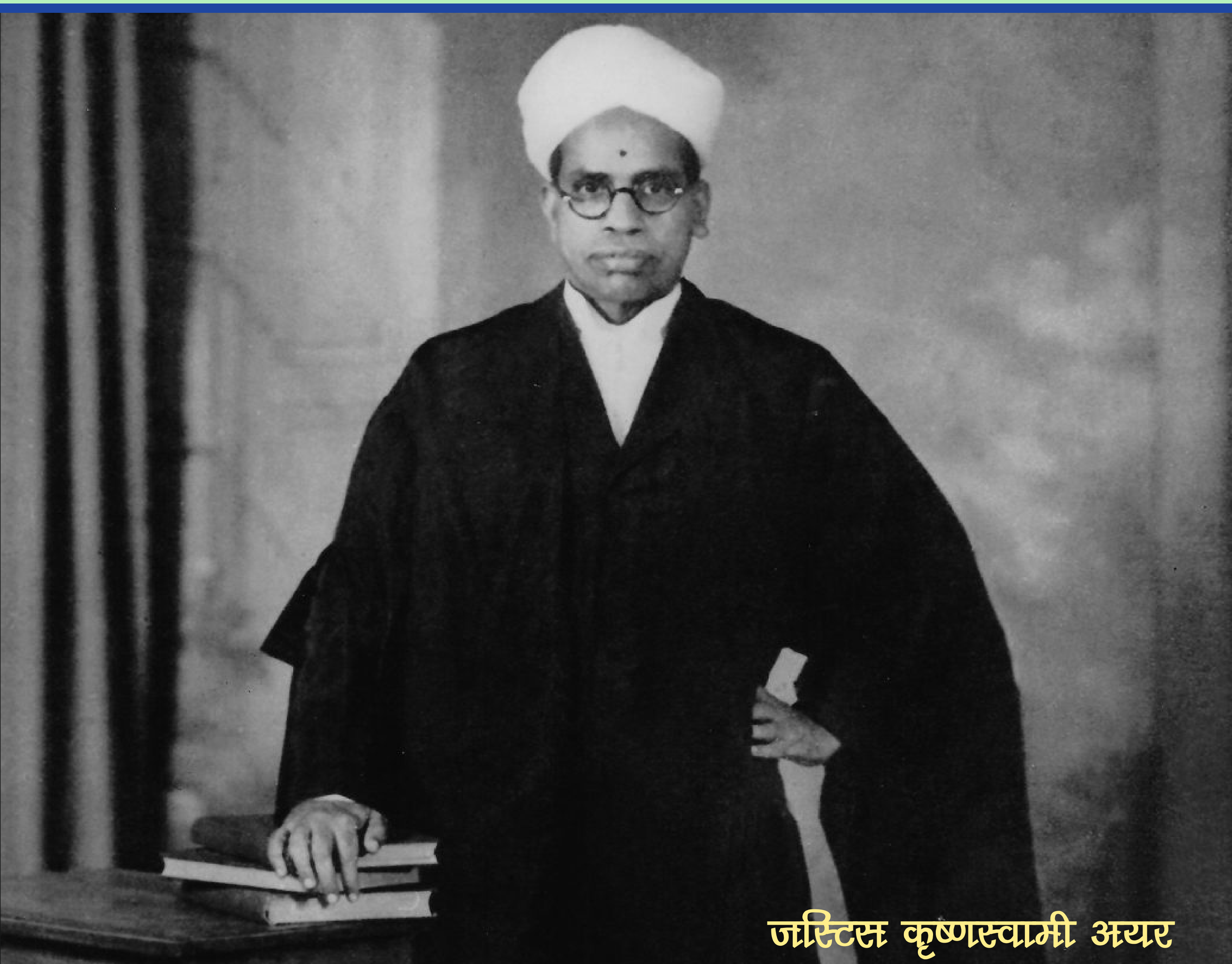

जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर

**समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।**

कनिका शर्मा,

वरिष्ठ पर्यवेक्षक (राजभाषा)

राजभाषा विभाग,

एन एच पी सी

# ऐ स्त्री - तेरी कहानी

मेरे गूंगे होते अल्फाज जब बहरे से होने लगे,
कोरे कागजों पर उतर कर, फिर वो बेपरवाह सरिता से बहने लगे॥
ऐ स्त्री तू अनंत, तेरे अनसुलझे एहसास भी हैं अनंत,
अनंत काल से दुख में लिपटी, दूर रहा तुझ से हर आनंद॥

जन्म लेते ही, बैठा दिया सिर पर पहरेदार,
जवानी कटी जैसे मजदूरों के ऊपर है ठेकेदार,
शादी ऐसी, जैसे खरीदी हुई संपत्ति को देखता चौकीदार,
भूला हर कोई, तूही है पूरे जगत की पालन हार॥

बाहर निकल देखकर, तू अपनी रंगत को संभाल ले,
ए लड़की चल तू ध्यान से, जरा अपना पल्लू संभाल ले,
घर की बहू हो, बोलते समय अपनी जुबान संभाल ले,
भूला हर कोई, तू अपनी कोख में पूरा वंश संभाल ले॥

जौहर भी तू ही करे, तूने ही दी सदा अग्नि परीक्षा,
हे विद्या दायिनी! स्कूल से दूर कर, बंद की तेरी हर शिक्षा,

तुझे जताया कमजोर हर जगह, ताकत तेरी कभी न मानी,
लेकिन सबने माना, शक्ति स्वरूपा लक्ष्मी बाई का नहीं कोई सानी ||

एक पिंजरे से निकाल, बिना मर्जी हाथ दूसरे को थमा दिया,
पति को मनवाया परमेश्वर, उस की छाया में ही जीवन बिता दिया,
बिन खुशी- बिन अधिकार जीना, लेना नहीं खुल कर सांस भी,
एहसासों को पीते जाना- मारते जाना, करना नहीं कभी शिकायत भी ||

विश्व पटल पर फैल गई, पर अपने घरौंदे में ही गूंगी रह गई,
ताकि एहु ए नम, एहसास हुए मौन और मैं सब कुछ कर्म समझ सह गई,
इतिहास गवाह है जब- जब चौसर पर सर झुकाए पांडव मौन हुए हैं,
तब- तब पुकार सुन हर सखी की, मदद को कान्हा प्रकट हुए हैं ||

असमंजस में हूँ कि अपने हैं बहरे, तो दूसरे को जज्बात कैसे कह दूँ,
अब कलयुग में सहायता को आए कान्हा को, रिश्ते में क्या नाम दूँ,
हर सखी मान, प्यार, आजादी, अपना मजबूत अस्तित्व चाहती है,
वो किसी और के चश्में से नहीं, अपनी आँखों से दुनिया देखना चाहती है ||

मैं अल्फाजों की शक्ल में अपने एहसास पन्नों पर उतारती जाती हूँ,
अब आंखों से छलकते हुए पानी को भी, प्यास लिखती जाती हूँ,
हिलोरे मारते एहसास और जिंदगी में घुल कर धुंधले होते गए गम,
अब मेरे जज्बातों से वाकिफ है, मेरे काँपते हाथ और मेरी कलम ||

मांगती हूँ बस इतना, चलूँ जब भी सड़क पर, तुम मुझे सेफ साइड कर लो,
पड़ूँ कभी कमजोर तो, भीड़ में भी तुम अपना हाथ मेरे कांधे पर रख लो,
मोहब्बत है कितनी ये भले न बोल कर बताओ,
बिन शब्दों के ही मुझे तुम बस इसका एहसास कराओ॥

स्त्री को पूजते आए जिस धरती पर, वहीं वह अबला और अभागी रह गई,
मीरा ने पीलिया जहर और सीता भी जमीन के अंदर समाई रह गई,
सिर्फ रसोई की महाराज या धनलक्ष्मी ही नहीं समझ ना होगा,
कितनी अनमोल हूँ, इसका एहसास भी हरपल कराना होगा॥

राजीव त्यागी
अल्मुनि 1981
लुडलो कैसल स्कूल, उत्तराखंड

# ठहराव

कुदरत हमें कुछ बताना चाहती है,
शायद हमें हमसे बचाना चाहती है।।

मानव अपनी करनी की वजह से बेहाल है,
पर जंतु जगत आज खुशहाल है।।

यह महामारी कतई इंसाफ नहीं है,
पर क्या आज आकाश भी कुछ ज्यादा साफ नहीं है?

सुना है आजकल मंदिर, मस्जिद पर भी ताला है।
पर इस विपदा ने सब धर्मो को एकजुट कर डाला है

कोर्ट कचहरी में भी बंदी है,
पर सुकून है कि अपराधों में भी मंदी है।।

कहने को हम घरों में कैद हैं।
वास्तव में देश के लिए मुस्तैद है।।

आज जब सारा संसार विराम पर है,
खुदा के कुछ बंदे मानवता के काम पर हैं।।

इन सब रत्नों को कोटि-कोटि प्रणाम है हमारा,
यही हैं, वो दूत उस खुदा के जो आज है सहारा।।

ये कठिन वक्त हमें जीना सीखा जाएंगा।
ये वक्त का ठहराव हमें हमसे मिला जाएगा।।

उत्सव

IRDA / IREDA

अशोक भीलवरिया
पूर्व प्रबंधक (सचिव), इरेडा


# समय चला, पर कैसे चला, पता ही नहीं चला,

जिन्दगी की आपाधापी में,
कब निकली उम्र हमारी यारो,
पता ही नहीं चला,

कंधे पर चढ़ने वाले बच्चे,
कब कंधे तक आ गए,
पता ही नहीं चला,

किराये के घर से शुरू हुआ था सफर अपना,
कब अपने घर तक आ गए,
पता ही नहीं चला,

साइकिल के पैडल मारते हुए
हांफते थे उस वक्त,
कब से हम कारों में घूमने लगे हैं,
पता ही नहीं चला,

कभी थे जिम्मेदारी हम माँ बाप की,
कब बच्चों के लिए हुए जिम्मेदार हम,
पता ही नहीं चला,

एक दौर था जब दिन में भी
बेखबर सो जाते थे,
कब रातों की उड़ गई नींद,
पता ही नहीं चला,
जिन काले घने बालों पर
इतराते थे कभी हम,
कब सफेद होना शुरू कर दिया,
पता ही नहीं चला,

बच्चों के लिए कमाने बचाने में
इतने मशगूल हुए हम,
कब बच्चे हमसे हुए दूर,
पता ही नहीं चला,

भरे पूरे परिवार से सीना चौड़ा रखते थे
हम,
अपने भाई बहनों पर गुमान था,
उन सब का साथ छूट गया,
कब परिवार हम दो पर सिमट गया,
पता ही नहीं चला,

दर दर भटके थे नौकरी की खातिर,
कब रिटायर होने का समय आ गया,
पता ही नहीं चला

इरेडा
IREDA

हर्षवर्धन आर्य
कवि और चित्रकार,
त्रिनगर, दिल्ली

# कोरोना !

अरे कोरोना !
निरीह जनों को अपने भय से त्रस्त कोरोना ||

माना, मानव की भूलों से
कुपित हुई हैसकल प्रकृति
सब जीवों कोखा मानव की
दानवतर है बनी प्रवृत्ति
करुणा शून्य हुआ जब मानव
तभी पड़ा है इस धरती को
तुम्हें इस तरह ढोना

अरे कोरोना !
निरी हजनों को अपने भय से त्रस्त कोरोना ||

काश! जिस तरह छूने भर से
तुम प्रवेश कर जाते तन में
करुणा, दया, प्रेम भी छूकर
यूँही फल जाते जन-जन में
रहते सभी जी वहिल-मिलकर

सुखद प्रकृति संग हँस कर – खिलकर
फिर पड़ता नारोना

अरे कोरोना !
निरीह जनों को अपने भय से त्रस्त कोरोना ||

लाँघ मनुजता की सीमाएँ
लड़ते हैं जो रोज परस्पर
अच्छा हो अब मानवता हित
तुझ से लड़ें परस्पर मिलकर
रखें स्वच्छता खान–पान में
जैसे पूजा और अजान में
सीख हाथ मुँह धोना

अरे कोरोना !
निरीह जनों को अपने भय से त्रस्त कोरोना ||

आदि सभ्यता और संस्कृति
देती वेद वाणी हमें सुमति
करें योग सब करें नमस्ते
रहें प्रेमसे हँसते – हँसते
जन जन समझे यदि यह युक्ति
पाले दुनिया तुझसे मुक्ति
दिखेना रूप घिनौना

अरे कोरोना !
निरीह जनों को अपने भय से त्रस्त कोरोना ||

इरेडा
IREDA

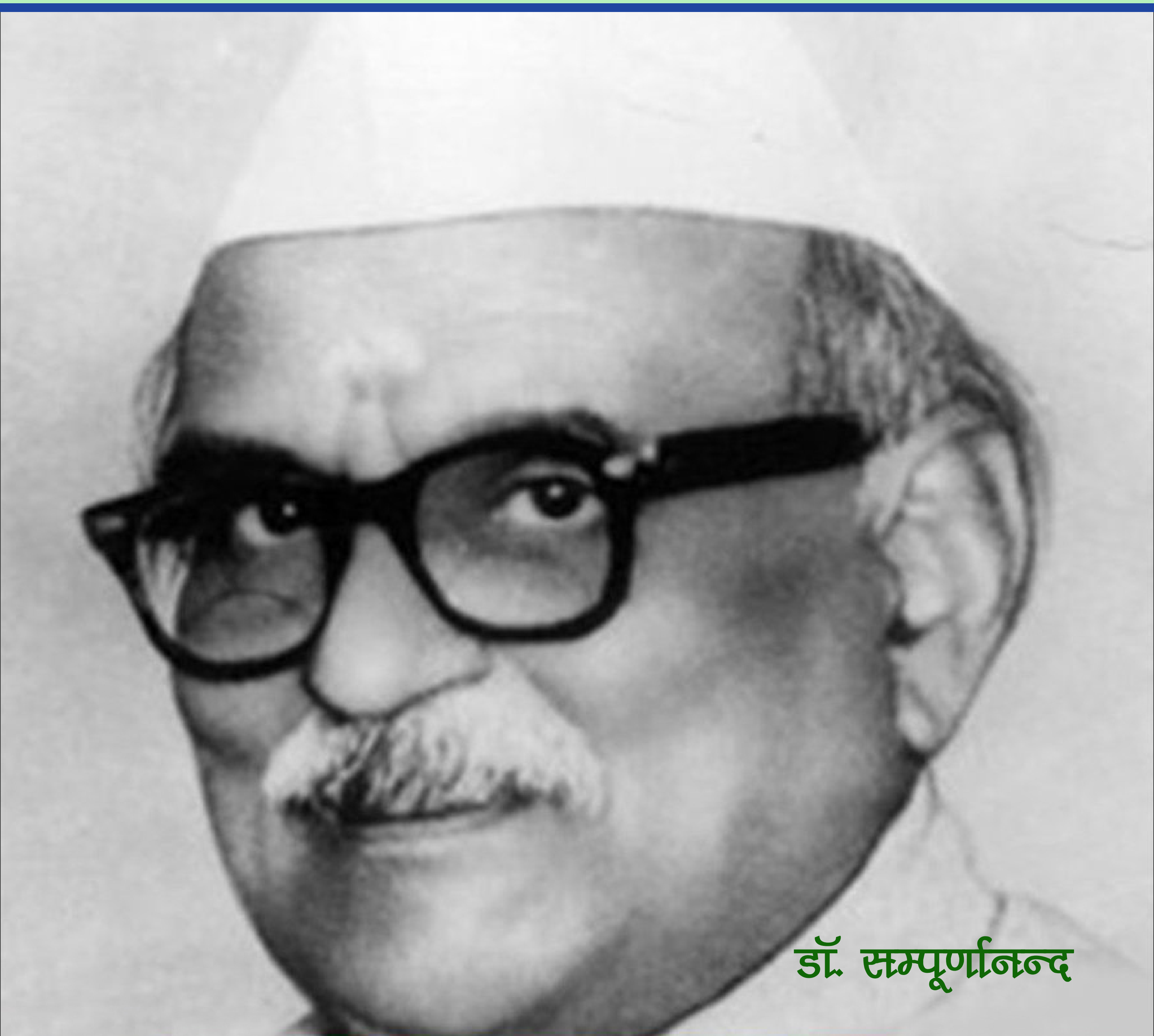

डॉ. सम्पूर्णानन्द

# हिंदी राष्ट्रीय एकता का प्रतीत है।

IRDA इरेडा IREDA

# माँ और बेटी

माँ से महान, आ से आत्मा,
दोनों अक्षरों के मिलन माँ।
माँ मही सयी माँग रीय सी,
सब का प्यार बांटती माँ।
दिल की पुकार सुनती माँ,
मन की भावना समझती माँ।
भूखा रह कर खिलाती माँ,
बीमारी में भी साथ नहीं छोड़ती माँ।
बेटा या बेटी जन्म देती माँ,
गर्भ संचार से दस महीने तक
बच्चे का खुब खयाल रखती माँ,
पैदा होते ही बच्चे पुकारते माँ।
बेटी से माँ का ज़्यादा प्यार,
माँ से सीखे संसार के संस्कार।
परिवार से बाँटे अपना सुविचार,
महलो में घूमें दुल्हन बनकर।
फिर दुल्हन के लिये आता दूल्हा,
शादी के बाद बेटी माँ बन जाती।
अब माँ और बेटी दोनों बराबर,
परन्तु दोनों में फरक उम्र का,
परन्तु फिर भी माँ हे माँ।

गोकुल नन्दा बेहेरा
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी
प्रमाण और प्रायोगिक संस्थान
चांदीपुर, ओडिशा

इरेडा
IREDA

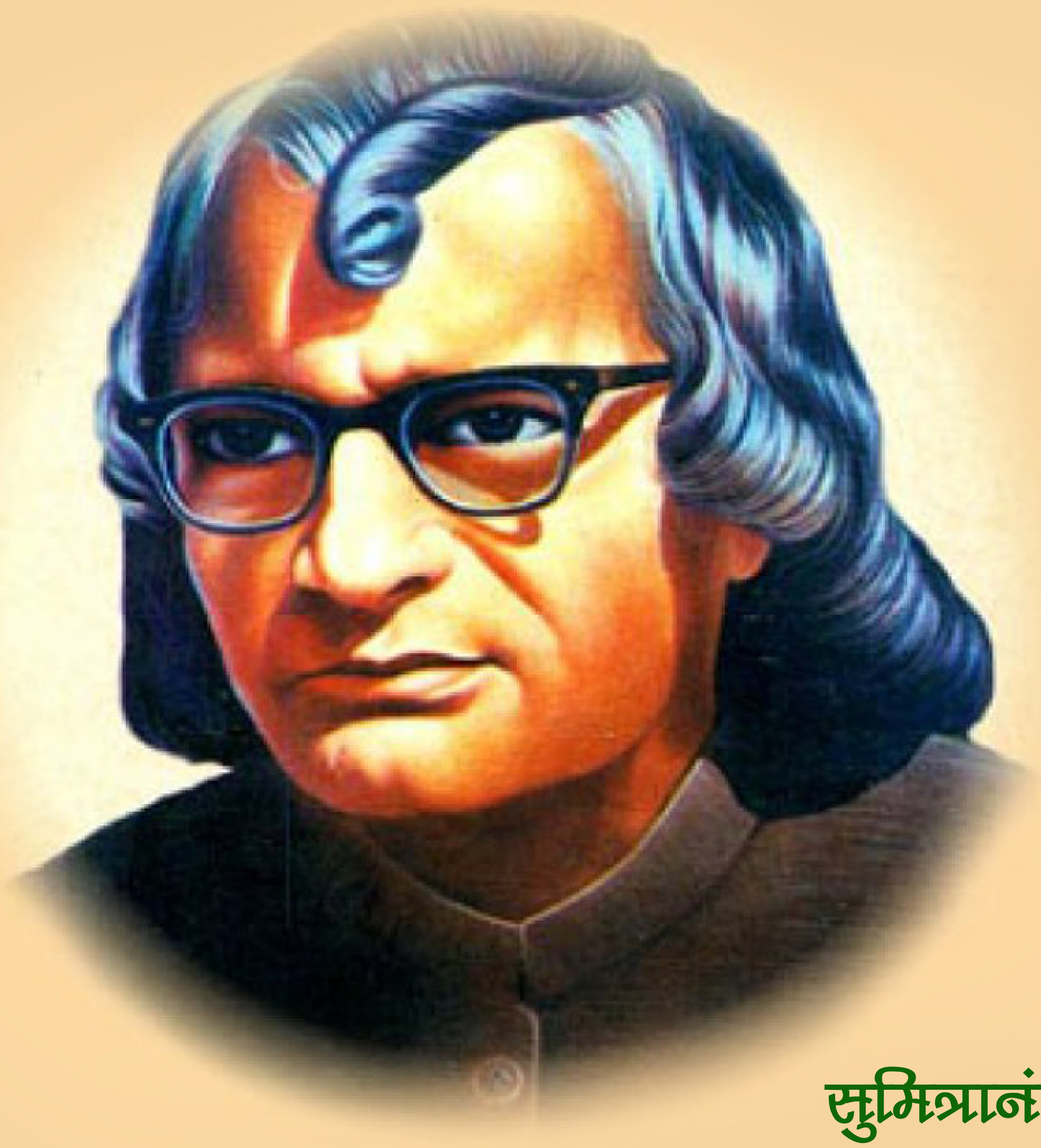

सुमित्रानंद पंत

# हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है।

योगेश हंस शर्मा
सहायक प्रबंधक, इरेडा

# मुन्शी प्रेमचंद जी की एक सुंदर कविता

ख्वाहिश नहीं मुझे, मशहूर होने की,
आप मुझे पहचानते हो, बस इतना ही काफी है।

अच्छे ने अच्छा और बुरे ने बुरा जाना मुझे,
क्योंकि जिसकी जितनी जरूरत थी, उसने उतना ही पहचाना मुझे।

जिन्दगी का फल सफा भी कितना अजीब है,
शामें कटती नहीं और साल गुजरते चले जा रहें है।

एक अजीब सी दौड है ये जिन्दगी,
जीत जाओ तो कई अपने पीछे छूट जाते हैं और
हार जाओ तो अपने ही पीछे छोड़ जाते हैं।

बैठ जाता हूँ मिट्टी पे अकसर,
क्योंकि मुझे अपनी औकात अच्छी लगती है।

मैंने समंदर से सीखा है जीने का सलीका,
चुपचाप से बहना और अपनी मौज मे रहना।

ऐसा नहीं की, मुझमें कोई ऐब नहीं है
पर सच कहता हूँ, मुझमें कोई फरेब नहीं है।
जल जाते है मेरे अंदाज से मेरे दुश्मन भी,

क्योंकि एक मुद्दत से मैंने,
न मोहब्बत बदली, और न दोस्त बदले हैं।
एक घडी खरीद कर हाथ मे क्या बांध ली
वक्त पीछे ही पड गया मेरे
सोचा था घर बना कर बैठूंगा सुकून से,
पर घर की जरूरतों ने, मुसाफिर बना डाला मुझे।

सुकून की बात मत कर ऐ गालिब,
बचपन वाला इतवार अब नहीं आता।

जीवन की भाग दौड मे, क्यूँ वक्त के साथ रंगत खो जाती है?
हँसती–खेलती जिन्दगी भी आम हो जाती है।

एक सवेरा था, जब हँसकर उठते थे हम,
और आज कई बार बिना मुस्कुराये ही शाम हो जाती है।

कितने दूर निकल गए रिश्तों को निभाते निभाते,
खुद को खो दिया हम ने अपनों को पाते पाते।

लोग कहते है, हम मुस्कुराते बहुत है,
और हम थक गए दर्द छुपाते छुपाते।

खुश हूँ और सबको खुश रखता हूँ,
लापरवाह हूँ फिर भी सब की परवाह करता हूँ।

मालूम है, कोई मोल नहीं है मेरा फिर भी
कुछ अनमोल लोगों से रिश्ता रखता हूँ।

उन्नति
दिल्ली

# कुछ पंक्तियां दिल को छू लेने वाली

‘तन्हा बैठी थी एक दिन मैं अपने मकान में,’
‘गोरइया बना रही थी घोंसला रोशनदान में।’

‘पलभर में आती पलभर में जाती थी वो।’
‘छोटे छोटे तिनके चोंच में भरलाती थी वो।’

‘अपना घर एक न्यारा, पेड़ पर बना रही थी वो’
‘तिनका था वो, ना ईंट ना गारा।’

‘कुछ दिन बाद....’
‘नन्हे से बच्चे घोंसले में चह चहाने लगे।’
‘पाल रही थी चिड़िया उन्हे,’

‘देखती थी मैं हर रोज उन्हें’
‘पंख निकलने पर दोनों बच्चे’
‘छोड़ अकेला मां को वो उड़ गए।’

‘चिड़िया से पूछा मैंने..’
‘तू तो थी मां उनकी’
‘फिर तोड़ गए क्यों वो रिश्ता..’
‘छोड़ अकेला क्यों तुझे वो उड़ गए।’

‘चिड़िया बोली.....’
‘परिन्दे और इंसान के बच्चे में यही तो फर्क है’

‘इंसान का बच्चा.....’
‘अपना हक जमाता है,’
‘हक न मिलने पर अपनो को’
‘कोर्ट कचहरी तक ले जाता।’

‘जज्बात मेरे इस तरह उनसे कुछ जुड़ गए।’

इरेडा
IREDA

# हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है ।

# इरेडा में १४ से २८ सितम्बेर २०१९ तक हिंदी पखवाड़ाका सफल आयोजन

प्रत्येक वर्ष की भांति, भारत सरकार के दिशा–निर्देशों के अनुसार इस वर्ष भी इरेडा में सितम्बर माह में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 14 से 28 सितम्बर तक किया गया। इस उपलक्ष्यी में 14 सितम्बर को इरेडा के कार्पोरेट कार्यालय, में दीप जलाकर हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ किया गया।

प्रमुख प्रबंधक (राजभाषा), सुश्री संगीता श्रीवास्तव ने समारोह के संचालन की शुरुआत करके सभी उपस्थिरत कार्मिकों को हिंदी दिवस की बधाई दी और उसके उपरांत निदेशक (वित्त), श्री एस. के. भार्गव ने माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार का हिंदी संदेश का पाठ किया और सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी। तत्पश्चात निदेशक (तकनीकी), श्री चिंतन शाह द्वारा माननीय नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री का हिंदी संदेश पढ़ा और डॉ.आर.सी.शर्मा, महाप्रबंधक (वित्तन एवं लेखा) द्वारा अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, इरेडा का हिंदी संदेश पढ़ा गया। इस अवसर पर इरेडा के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे। हिंदी पखवाड़ा के दौरान 06 प्रतियोगिताओं / कार्यशाला का आयोजन किया गया था। ''समाचार वाचन प्रतियोगिता'' का आयोजन विशेष तौर पर हिंदी भाषाओं के लिए किया गया।

27 सितम्बरर 2019 को हिंदी पखवाड़ा समापन / पुरस्काकर वितरण समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें निदेशक (वित्तव) द्वारा विजेताओं को प्रशस्तिपत्र से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर इरेडा की अर्धवार्षिक हिंदी ई–पत्रिका 'अक्षय क्रांति'(जनवरी–जून, 2019 अंक) का विमोचन भी किया गया। समारोह का समापन महाप्रबंधक (मानव संसाधन) डॉ. पी. श्रीनिवासन द्वारा धन्यवाद ज्ञापन देकर किया गया।

इरेडा
IREDA

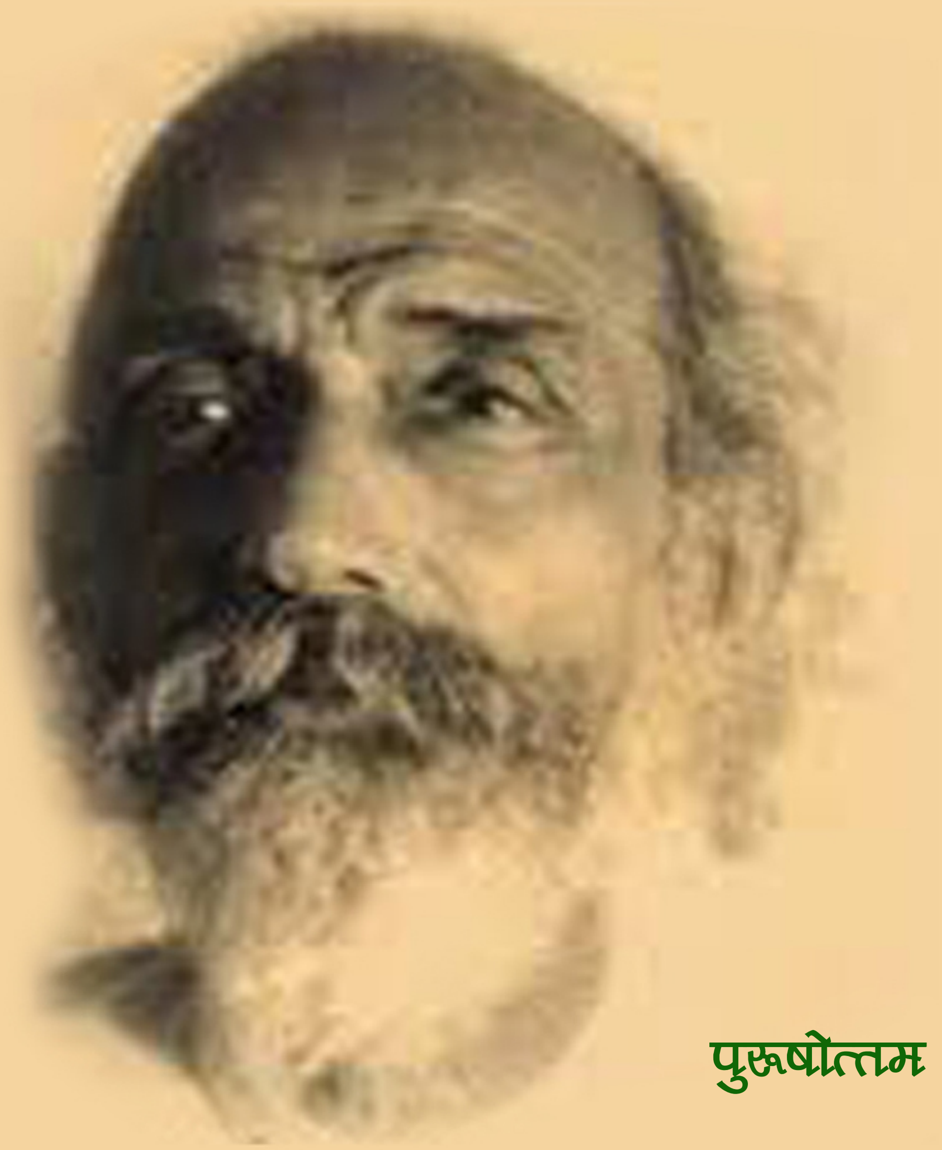

पुरूषोत्तम दास टंडन

## हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।

इरेडा
IREDA

# ENERGY FOR EVER